



वेरा प्रकाशन

पुस्तक सूची

2024-2026



2026 के प्रकाशन

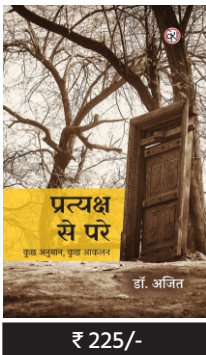


‘कबाड़ी का चश्मा’ सत्यनारायण की एक अनूठी साहित्यिक रचना है, जिसमें जीवन के बिखरे टुकड़ों को एक कबाड़ी की पैनी नज़र से सहेजा गया है। यह कृति कथा और कथेतर का सुंदर समन्वय प्रस्तुत करती है, जहाँ लेखक की गहन अवलोकन-शक्ति ग्रामीण जीवन, सामाजिक विसंगतियों और व्यक्तिगत अनुभूतियों को जीवंत रूप से उकेरती है।

पुस्तक : कबाड़ी का चश्मा (कथा-कथेतर)

रचनाकार : सत्यनारायण

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 256

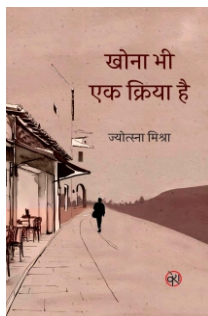


ज़रूरी-गैरज़रूरी से आगे बढ़ते ये नोट्स महज़ उद्धरण नहीं; ये वह कहना चाहते हैं जिसे शोर में न कहना संभव है, न सुन पाना। इनके बीच से गुज़रते हुए वे स्वर भी सुने जा सकते हैं, जो मन के निर्वासित कोनों में अनुभव का आकार लेने से लगातार इंकार करते रहे हैं। इन शब्दों की ध्वनियाँ भले सुगम संगीत न बनें, पर उनकी संरचना उन अधूरे रागों जैसी है, जिन्हें किसी लोक-वाद्य के सुरों में अचानक पहचानकर श्रोता अपने भीतर की कोई भूली हुई धुन अनायास गुनगुनाने लगता है।

पुस्तक : प्रत्यक्ष से परे (फुटकर नोट्स)

रचनाकार : डॉ. अजित

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 140



₹ 250 /-

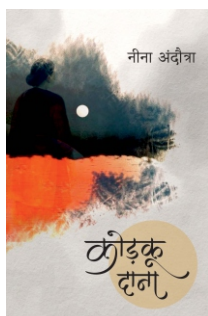
संग्रह की ग्यारह कहानियाँ जैसे समाज की अलग-अलग अवस्थाओं के चित्रात्मक अंकन की तरह हैं। समाज के अलग-अलग स्तर के जीवन के अलग-अलग अनुभवों के संचित कोश की तरह। ज्योत्स्ना जी की भाषा बहुत प्रभावित करती है, सुनाई भी देने वाली है और दिखाई देने वाली भी। अकारण नहीं है कि उनकी कहानियाँ पाठकों द्वारा खूब पसंद की जाती हैं।

— प्रभात रंजन

पुस्तक : खोना भी एक क्रिया है (कहानी-संग्रह)

रचनाकार : ज्योत्स्ना मिश्रा

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 154



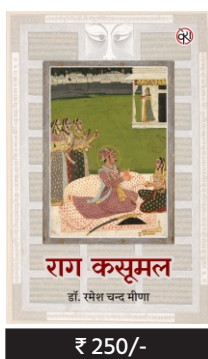
₹ 225/-

‘कोड़कू दाना’ में में ग्यारह कहानियाँ हैं, जिनमें औरतें हैं, मर्द हैं, बच्चे हैं, बूढ़े हैं, सब अपने-अपने कोने में सिमटे हुए। कोई रिश्ता टूट रहा है, कोई बनने की कोशिश में है, कोई बस चुपचाप देख रहा है कि सब कुछ कैसे खत्म होता जा रहा है। पर कहीं-कहीं, बहुत हल्के से, उम्मीद की एक पतली लकीर भी दिखती है।

पुस्तक : कोड़कू दाना (कहानी संग्रह)

रचनाकार : नीना अंदौत्रा

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 144



₹ 250/-

इतिहास, राग और विराग के त्रिवेणी-संगम से उपजी एक लयात्मक कथा, जिसमें राजस्थानी लोकरंग, नागरीदास- बणी-ठणी की दिव्य प्रेम-परंपरा, किशनगढ़ कलम की सूक्ष्मता और भक्ति-रस की माधुरी एक साथ प्रवाहित होती हैं। लेखक ने ऐतिहासिक प्रसंगों को आधार बनाकर कल्पना और रसात्मकता से एक साहित्यिक लोक रचा है। पुस्तक राजनीति, वीरता, कला, आध्यात्म और प्रेम के विविध रंगों को संतुलित रूप में प्रस्तुत करती है।

पुस्तक : राग कसूमल (उपन्यास)

रचनाकार : डॉ. रमेश चन्द मीणा

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 184



रिशों की सबसे बड़ी त्रासदी यह नहीं कि हमें चोट मिलती है, बल्कि यह कि कभी-कभी अनजाने में हम वही चोट आगे बढ़ा देते हैं। जहाँ समझ शुरू होती है, हिंसा चाहे हथियारों से हो या शाब्दिक, वहीं समाप्त हो जाती है। लेकिन यदि समझ न आवे तो वही दर्द दूसरों को हस्तांतरित कर देते हैं, किसी और के हिस्से की मामी बन कर, किसी और के आत्मसम्मान को चोट पहुँचा कर। इन शब्दों में एक स्त्री की नहीं, हर उस इंसान की कहानी है जिसने सहा भी है दोहराया भी। — आशा पाराशर

पुस्तक : उसी रहगुजर पर शायद (उपन्यास)

रचनाकार : आशा पाराशर

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 172



नागपुर की अपरिचित राहों पर कदम रखते हुए, एक युवा की जिंदगी अप्रत्याशित मोड़ों से गुजरती है। दिल्ली की कल्पनाओं से निकलकर महाराष्ट्र की धरती पर पहुँचकर, वह नई दोस्तियों, चुनौतियों और आत्मसंघर्ष के बीच उलझता है। क्या इन रास्तों पर मिलने वाली परछाइयाँ अतीत की छायाएँ हैं या भविष्य की आहटें? शशु का यह उपन्यास युवा मन की उथल-पुथल और जीवन की अनिश्चितताओं को सहज संवेदना से उकेरता है।

पुस्तक : रास्तों में मिलती हैं परछाइयाँ (उपन्यास)

रचनाकार : शशु

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 168

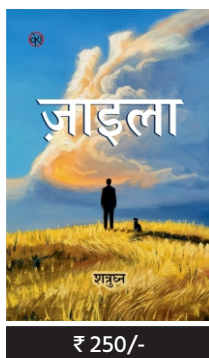


यह उपन्यास मानक और रजिया के प्रेम के जरिए धर्म, रूढ़िवादिता, सामाजिक विभाजन और वर्ग-संघर्ष की दीवारों को खोलता है। सरल पर गहरी भाषा में लिखी यह पुस्तक प्रेम की शाश्वत शक्ति और धर्म-जाति की दीवारों तोड़ने की पीड़ादायी लेकिन निर्भीक कोशिश की कहानी है, जो पाठक को यह सोचने के लिए बाध्य करती है कि क्या धर्म कभी प्रेम का पुल बन सकता है या हमने उसे हमेशा के लिए विभाजन की रेखा बना दिया है।

पुस्तक : रंग बदरंग (उपन्यास)

रचनाकार : आरव मिश्रा

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 330

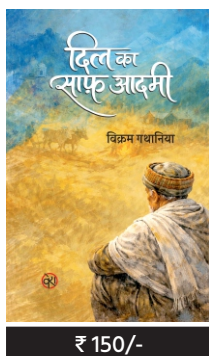


‘जाइला’ विज्ञान-कल्पना उपन्यास है, जिसमें बेतिया के युवा वैज्ञानिक मानस की कहानी है जो अंतरिक्ष एजेंसी में कार्य करते हुए दूसरी दुनिया की निवासी जाइला से संवाद स्थापित करता है। यह उपन्यास कल्पना, विज्ञान, प्रेम, संदेह और मानवीय संघर्षों को जोड़ते हुए दो लोकों के मिलन की अनोखी यात्रा प्रस्तुत करता है।

पुस्तक : जाइला (उपन्यास)

रचनाकार : शशुघ्न

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 152

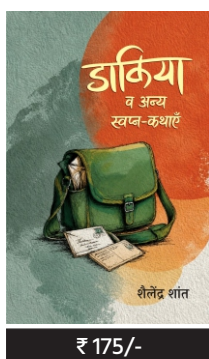


लेखक ने इस उपन्यास में शिवालिक पहाड़ियों के सीमांत गाँव की उस विशिष्ट संस्कृति को बहुत जीवंतता के साथ चित्रित किया है, जहाँ खेती-बाड़ी, पशुपालन, बैलों को चराना, रुटा-घासनी, महफिलें, भजन, कली-तंबाकू, पारिवारिक झगड़े, शरीकी लड़ाइयाँ और ग्रामीण रीति-रिवाज एक-दूसरे में गुंथे हुए हैं। रमा जैसी धैर्यवान, सहृदय और समाजसेवी बहू, लालसिंह, चमन, उमा, अंजलि जैसी पीढ़ियाँ और दुर्गासिंह का जटिल लेकिन साफ़ व्यक्तित्व, ये सब मिलकर एक पूरे युग और समाज का जीवंत चित्र प्रस्तुत करते हैं।

पुस्तक : दिल का साफ़ आदमी (उपन्यास)

रचनाकार : विक्रम गथानिया

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 80



कवि ब्रह्मांड, मृत्यु, प्रेम, स्मृति और पिता की अनुपस्थिति जैसे विषयों को अत्यंत संवेदनशीलता और दार्शनिक गहराई के साथ उकेरता है। प्रकृति, ग्रामीण जीवन, शहरी प्यास और मानवीय अस्तित्व की क्षणभंगुरता के बीच कवि का स्वर न तो ऊँचा है, न नाटकीय, वह बस सधी हुई, आत्मीय और सत्य की तलाश में डूबा हुआ है।

पुस्तक : डाकिया व अन्य स्वप्न-कथाएँ (स्वप्न-कथाएँ)

रचनाकार : शैलेन्द्र शान्त

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 94



₹ 250/-

राजस्थान की तपती रेत और लोक-स्मृतियों से जन्मा 'रेत का झरना' मनुष्य की जिजीविषा, प्रेम और अभाव की संवेदनाओं का जीवंत दस्तावेज़ है। मरुभूमि के संघर्ष भरे संसार में आशा और प्रेम को जीवित रखने वाली ये कहानियाँ लोक-संस्कृति और आधुनिक द्वंद्व को प्रभावशाली भाषा में प्रस्तुत करती हैं। यह संग्रह मिट्टी की गंध और मनुष्य बने रहने की ज़िद को महसूस कराने वाला है।

पुस्तक : रेत का झरना (कहानी)

रचनाकार : रिड़मल दान चारण 'राज'

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 162



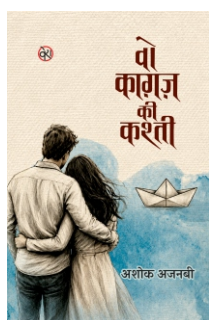
₹ 200/-

'का से कहूँ' पुस्तक की कहानियाँ पाठक को अपने आस-पास के चरित्रों से मिलाती हैं। ये कहानियाँ न तो ऊँची फिलॉसफी गाती हैं और न ही नाटकीय मोड़ खोजती हैं। ये तो बस हमारे बीच जीती-जागती ज़िंदगी की छोटी-छोटी घटनाओं, संबंधों के टूटने-जुड़ने, स्त्री-मन की पीड़ा, वृद्धावस्था का अकेलापन, प्रेम की मासूमियत और सामाजिक विभाजनों के दर्द को सरल, संवेदनशील और गहरी नज़र से देखती हैं।

पुस्तक : का से कहूँ (कहानी)

रचनाकार : शशि पाठक

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 104



₹ 200/-

'वो कागज़ की कश्ती' में जहाँ अनेक मार्मिक कहानियाँ संकलित हैं, वहीं कुछ संस्मरण, जीवंत रेखाचित्र तथा कुछ प्रभावशाली लघुकथाएँ भी शामिल हैं। कहानी-लेखन के क्षेत्र में अशोक अजनबी का यह द्वितीय कहानी संग्रह है। उन्होंने विविध विधाओं को संवेदनशीलता और आत्मीयता के साथ प्रभावशाली ढंग से पिरोया है। इन रचनाओं की भाषा अत्यंत सहज, भावप्रधान और बोलचाल की आत्मीयता से भरी हुई है।

पुस्तक : वो कागज़ की कश्ती (कथा संग्रह)

रचनाकार : अशोक अजनबी

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 112



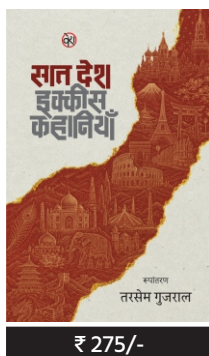
‘जूरी बाबा’ राजस्थानी जनजीवन, लोक-संस्कृति और मानवीय संवेदनाओं का एक जीवंत दस्तावेज़ है। इस संग्रह की कहानियाँ केवल मनोरंजन नहीं करतीं, बल्कि समाज के उन कोनों को प्रकाशित करती हैं जहाँ पितृसत्तात्मक बेड़ियाँ, अंधविश्वास और संघर्ष की मर्मन्तक गाथाएँ छिपी हैं।

— डॉ. संतोष पटेल, कवि-आलोचक

पुस्तक : जूरी बाबा (कहानी)

रचनाकार : राजेन्द्र सजल

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 114



रूस की गहरी मनोवैज्ञानिक अंतर्दृष्टि, जापान की सूक्ष्म संवेदनशीलता, फ्रांस की पैनी निरीक्षण-शक्ति, इटली की यथार्थवादी ऊष्मा, पाकिस्तान की मार्मिकता, भारत की सामाजिक चेतना तथा चीन की तीखी आलोचना—सात देशों की इक्कीस चुनी हुई कहानियाँ एक-दूसरे से भिन्न होते हुए भी मानव-जीवन की सार्वभौमिक पीड़ा, प्रेम, संघर्ष और सत्य की खोज में एकाकार होती हैं।

पुस्तक : सात देश, इक्कीस कहानियाँ (विश्व कहानियाँ)

रूपांतरण : तरसेम गुजराल

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 172

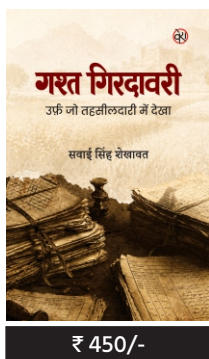


यथार्थ की खुरदरी ज़मीन से उपजी ये कहानियाँ कहन में सहज हैं। यहाँ किसी विचारधारा का अनावश्यक आग्रह नहीं दिखता। यहाँ गाँव की पगडंडियाँ हैं, आँगन है, जहाँ बसंत में खिलने वाले फूल हैं और शूल भी तो हैं। यह एकदम आस-पास घटित जीवन है, जिसे संतोषी ने देखा और अपनी भाषायी कुशलता के साथ उसे जिस का तस धर दिया। स्थानीय शब्दों और मुहावरों के सहारे ये कहानियाँ पूरी प्रमाणिकता के साथ आगे बढ़ती हैं।

पुस्तक : मैं कहाँ जाऊँगी? (कहानी)

रचनाकार : संतोषी

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 128



सवाई सिंह शेखावत उन थोड़े कवियों में हैं जो गद्य-लेखन में भी निष्णात हैं और आलोचना तथा वैचारिक लेखन भी अधिकार से करते हैं। ...ये वृत्तांत बहुत रोचक हैं, इनमें एक क्रम है तो अनुभव संसार का विस्तार भी, साथ ही जीवन का वैविध्य और उसके तमाम रंग। यह पुस्तक समकालीन हिन्दी साहित्य में इस विशिष्ट लेखन धारा में मील का पत्थर है।

— राजाराम भादू, प्रसिद्ध समालोचक

पुस्तक : गश्त गिरदावरी उर्फ जो तहसीलदारी में देखा (संस्मरण)

रचनाकार : सवाई सिंह शेखावत

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 400

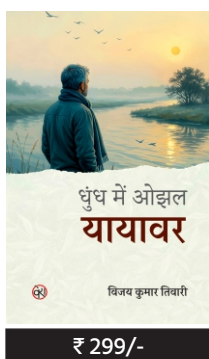


कृति में एक पूरी पीढ़ी की साँस है। उस पीढ़ी की, जिसने मिट्टी की गंध में सपने बुने, रेडियो की आवाज़ में दुनिया सुनी और गली की धूल में अपना बचपन गढ़ा। ये क्रिसे नायकत्व के नहीं, साधारणता के हैं। आज के समय में, जब बचपन स्क्रीन की चमक में सिमट चुका है और रिश्ते सूचनाओं की तेजी में छिटक जाते हैं, यह पुस्तक एक विलोम-प्रतीक बनकर सामने आती है। जेन जी, इन पृष्ठों में अपने से पहले की दुनिया की नब्ब छू सकते हैं।

पुस्तक : ऑफ़लाइन बचपन के क्रिसे (संस्मरण)

रचनाकार : डॉ. अमित भारद्वाज

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 162

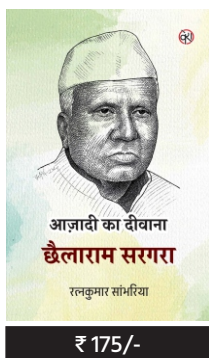


विजय कुमार तिवारी इस पुस्तक में मानसिक-शारीरिक द्वंद्व और जीवन के गहरे सरोकारों को साथ लेकर चले हैं। उनकी कलम में जो संवेदना है, जो सहजता है और जो सत्य की निरंतर तलाश है, वह पाठक को भी यायावर बना देती है। पीड़ादायक है कि यह यायावर जो अपने पाठकों को यात्रा और भ्रमण का मानसिक सुख बाँटने निकला था, स्वयं अपने अंतिम गंतव्य की ओर किसी धुंध में ओझल हो गया।

पुस्तक : धुंध में ओझल यायावर (यात्रा वृत्तांत)

रचनाकार : विजय कुमार तिवारी

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 198



छैलाराम सरगरा ऐसे स्वतंत्रता सेनानी थे, जिन्होंने ग्रामीण परिवेश में रहते हुए जागीरदार की दबंगई के बीच मारवाड़ लोक परिषद् की सदस्यता ग्रहण की। गाँव के आंदोलनवादी युवाओं के साथ जागीरदार के अत्याचारों के खिलाफ आवाज़ उठाई। जयनारायण व्यास, मथुरादास माथुर, सूरज प्रकाश 'पापा', रणछोड़ दास गट्टानी जैसे प्रखर स्वतंत्रता सेनानियों के साथ मारवाड़ व्यापी आंदोलनों में भाग लिया। लाठियाँ खाईं, जेल गये और यंत्रणाएँ सहों।

पुस्तक : आज़ादी का दीवाना : छैलाराम सरगरा (नाटक)

रचनाकार : रत्नकुमार सांभरिया

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 94

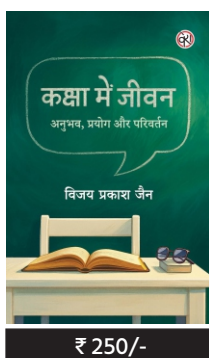


1927 में न्यू एल्फ्रेड थियेट्रिकल कंपनी के लिए लिखा गया यह नाटक श्रीकृष्ण-रुक्मिणी के विवाह की दिव्य कथा को आधार बनाकर केवल धार्मिक अनुराग ही नहीं, बल्कि उस काल के सामाजिक-राजनीतिक परिवेश को भी सूक्ष्म रूप से प्रतिबिंबित करता है। जहाँ रंगमंचों पर बाज़ारू मनोरंजन का बोलबाला था, वहाँ पं. राधेश्याम ने शुद्ध हिन्दी के माध्यम से आदर्शवादी, नैतिक और राष्ट्रप्रेमी चेतना को स्थापित किया। यह नाटक मात्र कृष्ण-रुक्मिणी के प्रेम-विवाह की कथा नहीं, अपितु भक्ति, साहस, प्रतिरोध और सत्य की विजय का प्रतीक है।

पुस्तक : रुक्मिणी-मंगल (नाटक)

रचनाकार : पं. राधेश्याम कथावाचक, संपादन : हरिशंकर शर्मा

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 152

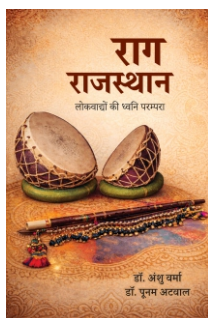


यह पुस्तक शिक्षक साथियों के लिए रोज़मर्रा की चुनौतियों से संवाद करती है, अभिभावकों के लिए अपने बच्चों को समझने, और शोधार्थियों के लिए प्राथमिक शिक्षा के विविध आयामों पर सोचने के ढेर सारे सवाल देती है। इसमें सलाहें कम और अनुभव, संवाद, कहानी, बच्चों की आँखों से देखी गई दुनिया बहुत अधिक है।

पुस्तक : कक्षा में जीवन : अनुभव, प्रयोग और परिवर्तन (आलेख)

रचनाकार : विजय प्रकाश जैन

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 156



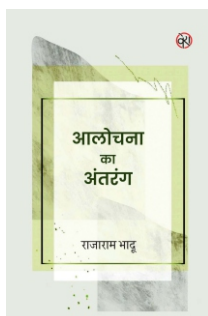
₹ 275/-

पुस्तक में राजस्थान के प्रमुख लोकवाद्यों— नड़, नगाड़ा और मोरचंग—की बनावट, वादन-शैली तथा उनके सामाजिक-सांस्कृतिक महत्त्व का सरल और सुव्यवस्थित अध्ययन प्रस्तुत है। इसमें राजस्थान के सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य के साथ इन वाद्यों की परम्परा को विस्तार से समझाया गया है, जिससे विद्यार्थी और शोधार्थी दोनों लाभान्वित हो सकते हैं।

पुस्तक : राग राजस्थान (राजस्थानी लोक वाद्य)

रचनाकार : डॉ. अंशु वर्मा, डॉ. पूनम अटवाल

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 192



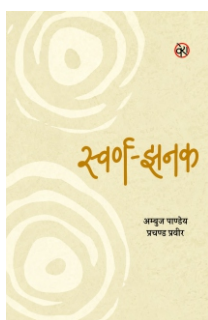
₹ 250/-

राजाराम भादू की आलोचना में विचार और संवेदना का ज़रूरी संतुलन है। उनकी मान्यता के अनुसार आलोचना भी अहम् सृजनात्मक कार्य है और इसमें भी कला की भाषा होनी चाहिए। उन्होंने केवल कृति के आस्वादन के लिए ही यह प्रयुक्ति नहीं अपनायी है, बल्कि इस प्रविधि से वे इसके गहरे विश्लेषण में उतरते हैं।

पुस्तक : आलोचना का अंतरंग (आलोचना)

रचनाकार : राजाराम भादू

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 166



₹ 250/-

स्वर्ण-ज्ञानक छोटे-बड़े सत्रह आलेखों की एक मँझौली पोथी है। लेखकद्वय की इस साझी रचना में पुस्तकों और रचनाकारों की चर्चा प्रमुख है। यहाँ बिना विपर्यय के उपजीव्य स्वर्ण है, उपजात स्वर्ण-ज्ञानक।

पुस्तक : स्वर्ण-ज्ञानक (आलोचना)

रचनाकार : अम्बुज पाण्डेय, प्रचण्ड प्रवीर

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 164

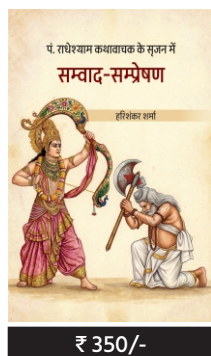


पं. राधेश्याम कथावाचक की रचनाओं में नारी का चित्रण मात्र पात्र-रचना नहीं, अपितु एक गहन नारी-चेतना का प्रखर और बहुआयामी उद्घाटन है। कथावाचक जी की नायिकाएँ परंपरा और आधुनिकता, त्याग और विद्रोह, सतीत्व और सामाजिक जागरण, शक्ति और संवेदना के अद्भुत समन्वय का प्रतीक बनकर उभरती हैं। यह शोध-संग्रह कथावाचक जी की सर्जना में नारी-चेतना के विविध आयामों को समग्रता से उद्घाटित करता है।

पुस्तक : पं. राधेश्याम कथावाचक की नारी चेतना (आलेख)

संपादक : हरिशंकर शर्मा

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 376



हरिशंकर शर्मा ने इस पुस्तक में कथावाचक की प्रमुख नाट्य कृतियों में सम्वाद की शिल्पगत सूक्ष्मता, भाषा की लोकप्रियता, रंगमंचीय प्रभावशीलता तथा सामाजिक-राष्ट्रीय चेतना के सम्प्रेषण को गहनता से विश्लेषित किया है। साथ ही यह भी चिह्नित किया है कि कैसे पं. राधेश्याम कथावाचक ने पारसी रंगमंच की परम्परा को हिन्दी में नया रूप देते हुए सम्वाद को जनसुलभ, भावात्मक और प्रेरक बनाया।

पुस्तक : पं. राधेश्याम कथावाचक के सृजन में सम्वाद सम्प्रेषण

रचनाकार : हरिशंकर शर्मा (आलोचना)

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 194

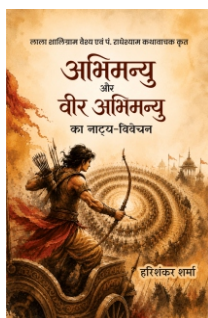


हरिशंकर शर्मा की यह कृति पहली बार पंडित राधेश्याम कथावाचक की 'राधेश्याम रामायण' के विभिन्न संस्करणों— सन् 1916 से लेकर 1982 तक की विकास-यात्रा का गंभीर अध्ययन प्रस्तुत करती है। भाषा का शुद्धिकरण, नारी-दृष्टि, सामाजिक-राजनीतिक चेतना और युगधर्म के तालमेल को लेखक ने कथा-खंडों के माध्यम से उजागर किया है। यह युग-पुरुष की रचना-प्रक्रिया और उसके कालजयी महत्व का पुनर्मूल्यांकन है।

पुस्तक : राधेश्याम रामायण : संस्करणों पर दृष्टि (आलोचना)

रचनाकार : हरिशंकर शर्मा

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 378



₹ 200/-

महाभारत की अमर कथा पर आधारित दो महत्त्वपूर्ण नाटक— लाला शालिग्राम वैश्य कृत 'अभिमन्यु' और पं. राधेश्याम कथावाचक कृत 'वीर अभिमन्यु' हिन्दी नाट्य-परंपरा के दो भिन्न ध्रुव हैं। यह पुस्तक दोनों कृतियों का तुलनात्मक विवेचन प्रस्तुत करती है। नाट्य-प्रेमियों, शोधार्थियों और साहित्य-रसिकों के लिए यह पुस्तक एक अनिवार्य संदर्भ-ग्रंथ है।

पुस्तक : अभिमन्यु और वीर अभिमन्यु का नाट्य विवेचन (आलोचना)

रचनाकार : हरिशंकर शर्मा

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 96



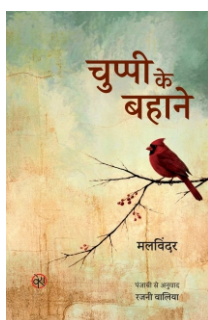
₹ 250/-

मालिनी गौतम ने गुजराती की नौ युवा आवाजों को चुना है— ध्वनिल पारेख, पीयूष ठक्कर, जयेश जीवीबेन सोलंकी, जितेन्द्र वसावा, हार्दिक व्यास, एषा दादावाला, अनिल चावड़ा, कुलदीप कारिया और मेहुल देवकला। वरिष्ठ आलोचक अजय तिवारी की गहन भूमिका तथा मालिनी गौतम के सजग प्रवेश लेख के साथ यह संकलन हिंदी पाठकों के लिए गुजराती युवा कविता का एक विश्वसनीय और हृदयग्राही परिचय प्रस्तुत करता है।

पुस्तक : गुजराती युवा कविता (अनूदित कविता संकलन)

संपादन-अनुवाद : मालिनी गौतम

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 144



₹ 175/-

इस संकलन की कविताएँ चुप्पी को केन्द्र में रखकर मानवीय अस्तित्व की गहरी पीड़ा, सामाजिक विडंबनाओं, टूटते सपनों और आधुनिक जीवन की संवेदनहीनता को अनूठे काव्य-बिंबों, रूपकों और प्रतीकों के माध्यम से उजागर करती हैं। मलविंदर की काव्य-भाषा अत्यंत ताजी, सशक्त और नवीन है। वे मेटाफर को कविता की आत्मा बनाते हैं और एक-एक शब्द को जीवंत बिंब, संकेत और विचार में बदल देते हैं।

पुस्तक : चुप्पी के बहाने (पंजाबी से अनूदित लम्बी कविता)

रचनाकार : मलविंदर

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 90



अमेय कान्त का कविता संग्रह 'किसी छूटे हुए दिन में' जीवन के सूक्ष्म और लगभग अदृश्य क्षणों को सहेजता है, जो अक्सर हमारे ध्यान से बच जाते हैं। कवि की नज़र न विगत में खोती है, न भविष्य की कल्पना में। वे वर्तमान के ठीक बीच खड़े होकर, बीतते हुए और आने वाले समय को एक साथ देखते हैं। सहज, सधी हुई सरल भाषा में लिखी ये कविताएँ गहरे तक छूती हैं।

पुस्तक : छूटे हुए किसी दिन में (कविता)

रचनाकार : अमेय कान्त

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 112

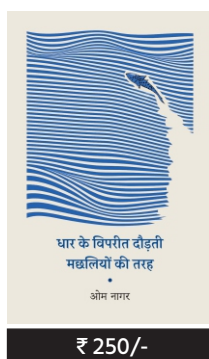


कवि ब्रह्मांड, मृत्यु, प्रेम, स्मृति और पिता की अनुपस्थिति जैसे विषयों को अत्यंत संवेदनशीलता और दार्शनिक गहराई के साथ उकेरता है। प्रकृति, ग्रामीण जीवन, शहरी प्यास और मानवीय अस्तित्व की क्षणभंगुरता के बीच कवि का स्वर न तो ऊँचा है, न नाटकीय, वह बस सधी हुई, आत्मीय और सत्य की तलाश में डूबा हुआ है।

पुस्तक : खिड़की वाली सीट से देखते हुए (कविता)

रचनाकार : हर्षिल पाटीदार

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 116



ओम नागर लगातार सृजन करने की क्षमता से संपन्न हैं और हिन्दी एवं राजस्थानी में लगभग सभी विधाओं में लिखते हैं। यह संग्रह विविध विषयों पर बहुत मर्मस्पर्शी कविताओं से समृद्ध है। यहाँ औरत और मशीन का फ़र्क़ है, साँटियों के बैल हैं, जिन्हें कहीं नहीं जाना है वे लोग हैं, आतंक के साएँ में बच्चे हैं और गाँव की उदास गीली आँखें हैं। और भी बहुत कुछ है, उनके अपने विशिष्ट अंदाज़ का, जिसमें स्व अर्जित सादगी है और अर्थों की अनेक परतें। कहीं कोई उलझाव नहीं, मगर अपने ट्रीटमेंट में बहु-परती और असरदार। - विनोद पदरज

पुस्तक : धार के विपरीत दौड़ती मछलियों की तरह (कविताएँ)

रचनाकार : ओम नागर

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 156



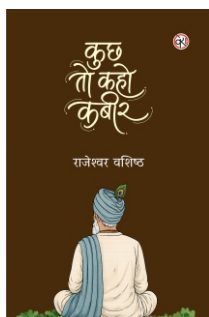
₹ 200/-

मंजू जैन की कविताएँ स्त्री-मन की व्यथा कहती हैं, जिन्हें बार-बार खुद को टालना पड़ता है, क्योंकि पुरुष अपनी सहमति नहीं देता। पुरुष-प्रधान समाज में उसकी सहमति के बिना काम नहीं चलता, टकराव होने का खतरा बना रहता है। मंजू जैन स्त्रियों की इस पीड़ा को समझती हैं। उनकी कविताओं में यह लगातार दर्ज होती है, मगर उसे कहने का उनका अंदाज़ शिकायत का नहीं, समझाने का है। यह अंदाज़ उनकी कविताओं को एक अलग पहचान देता है। - संजीव कौशल

पुस्तक : रात की हथेलियों पर चाँद (कविता)

रचनाकार : मंजू जैन

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 122



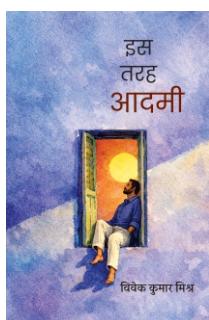
₹ 250/-

‘कुछ तो कहो कबीर’ संग्रह में शामिल कविताओं को पढ़ते हुए यह विश्वास बना रहता है कि कवि कहीं भी वैचारिक गुलामी का शिकार नहीं है। न तो चश्मे का कोई ख़ास रंग है और न ही तो किसी विशेष रंग के प्रति पागलपन। इन कविताओं में क्रांति वहीं है जहाँ ज़रूरत पड़ती है। अनायास गलाफाड़ चीखने-चिल्लाने की न तो आदत है और न ही तो व्यवहार। जो ओढ़ी हुई विचारधारा कहती है या कहना चाहती है कवि वह नहीं कह रहा है। - अनिल कुमार पाण्डेय

पुस्तक : कुछ तो कहो कबीर (कविता)

रचनाकार : राजेश्वर वशिष्ठ

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 150



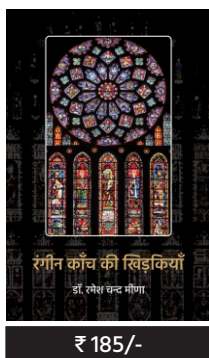
₹ 250/-

‘इस तरह आदमी’ आदमी से मिलते-जुलते आदमियों से बातें करते हुए जीवन को सूत्रों में समझने की एक गहरी कोशिश है। यहाँ अनगिनत आदमियों की एक लंबी श्रृंखला है। जहाँ हम सब खोजते रहते हैं कि असल में आदमी कहाँ है और आदमी बनते कैसे हैं। आदमी को बनते हुए देखना बेहद दिलचस्प है। यह कोई एक-दो दिन की कथा नहीं, युगों-युगों से चली आ रही आदमी की कथा है, जो कविता के रूप में हमारे सामने आई है।

पुस्तक : इस तरह आदमी (कविता)

रचनाकार : विवेक कुमार मिश्र

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 164



मनुष्य की सांस्कृतिक यात्रा सदैव सौंदर्य की खोज रही है। गुफाओं की रेखाओं से आधुनिक कला तक, उसने रंगों, आकृतियों, ध्वनियों और शब्दों में अपने भीतर के प्रकाश को अभिव्यक्त किया है। कला वही अनश्वर लौ है जो संवेदनशीलता को जीवित रखती है। प्रस्तुत कविता-संग्रह 'रंगीन काँच की खिड़कियाँ' इसी सौंदर्य-अन्वेषण की काव्यात्मक यात्रा है।

पुस्तक : रंगीन काँच की खिड़कियाँ (कविता)

रचनाकार : डॉ. रमेश चन्द मीणा

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 108

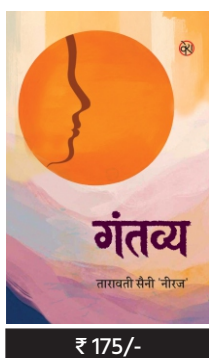


यदि जीवन की अनिश्चितताओं के चित्र बनाए जाएँ, तो वे निश्चित रूप से कवयित्री पारमिता षडंगी की कविताओं की तरह होंगे। धूसर रंग की भावनाएँ पारमिता की कलम से निकलकर चटख रंगीन हो जाती हैं। उड़िया एवं हिन्दी साहित्य का जाना-माना नाम हैं पारमिता षडंगी। कुल तियालीस कविताओं की यह पुस्तक पाठक को अपनी और जग की लौकिक-अलौकिक वेदना के पार उतरने का सामर्थ्य देती है। —ज्योत्स्ना मिश्रा

पुस्तक : तितिक्षा (कविता)

रचनाकार : पारमिता षडंगी

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 100



इस संग्रह में कवयित्री जीवन के साधारण क्षणों को गहरे भावात्मक अर्थ देती हैं। यहाँ स्त्री-संवेदना मुखर है, पर वह कोरी शिकायत या नारेबाजी में नहीं उलझती। वह संस्कृति, स्मृति, प्रतीक्षा और वापसी के सूक्ष्म अनुभवों के माध्यम से मानवीय अस्तित्व की जटिलताओं को छूती है। कविताएँ सरल भाषा में लिखी गई हैं, लेकिन उनमें एक गहरी शांति और आत्मीयता है जो पाठक को चुपचाप अपने भीतर ले जाती है।

पुस्तक : गंतव्य (कविता)

रचनाकार : तारावती सैनी 'नीरज'

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 112

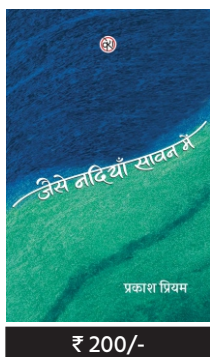


‘आदमी था गाँव का’ में दस दर्जन के करीब ग़ज़लें शामिल की गई हैं। इनकी ज़मीं शायर मेघांश ने कहीं से उधार नहीं ली है। मेघांश ने वो सारा दर्द और स्थितियाँ खुद जी हैं या अपने आस-पास देखी हैं। यही वजह है कि इनके शेर सच्चे हैं। सच्चे शेर की खुशबू निराली ही हुआ करती है यही वजह होती है कि ग़ज़ल का एक-एक शेर रूह को छू जाता है। शेर शायर और श्रोताओं एवं पाठकों के बीच अव्यक्त संवाद होते हैं। – सतीश व्यास ‘आस’

पुस्तक : आदमी था गाँव का (ग़ज़ल)

रचनाकार : देवकिशन ‘मेघांश’

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 140



ये कविताएँ अपनी अनुभूतियों को एक लय के साथ अभिव्यक्त करने का प्रयास करती हैं। जो सुखद है। छंद कवि को एक ढाँचागत चुनौती देता है, जिसे रचनाकार को अपनी भाषिक लोच के साथ निभाना होता है। उसके लिए आपके पास एक अच्छी समृद्ध शब्दावली होनी चाहिए। इन कविताओं को देखते हुए यह भी लगता है कि कवि ने अपने अध्ययन से अच्छी शब्द-राशि जुटाई है। – आर. चेतनक्रांति

पुस्तक : जैसे नदियाँ सावन में (कविता)

रचनाकार : प्रकाश प्रियम

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 144

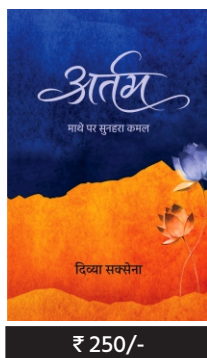


इस कृति में जीवन के विभिन्न रंग- मन, प्रेम, आशा, उम्मीद व सुख-दुख तो सम्मिलित हैं, साथ ही प्रकृति के विभिन्न रूप चांद, सितारे, नदियाँ और स्त्री, पुरुष, बालक मन आदि के माध्यम से अपने मन की पीड़ा, सपने, द्वंद, विचार, प्रकट करने का भी उम्दा प्रयास है। जीवन की सच्चाई, भूख, रोटी, रिश्ते-नाते, गरीबी, ऊँच-नीच, जात-पात, धर्म के साथ देश प्रेम आदि पर कविता लिख कर एक संवेदनशील मन की अभिव्यक्ति प्रस्तुति की गई है।

पुस्तक : मैं रुका नहीं (कविता)

रचनाकार : राजकुमार इन्द्रेश

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 160



इन कविताओं में जीवन की सूक्ष्म संवेदनाएँ, मातृत्व की दिव्य ममता, नारी-शक्ति की जागृति, प्रकृति की गहन सौंदर्यता तथा सामाजिक विसंगतियों का सहज चित्रण हुआ है। कवयित्री की आध्यात्मिक दृष्टि से रचित ये रचनाएँ, दैनंदिन संघर्षों और आत्मिक खोज की प्रतिध्वनियाँ हैं, जो पाठक को आत्म-चिंतन की गहराइयों में ले जाती हैं।

पुस्तक : अर्तम् : माथे पर सुनहरा कमल (कविता)

रचनाकार : दिव्या सक्सेना

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 134

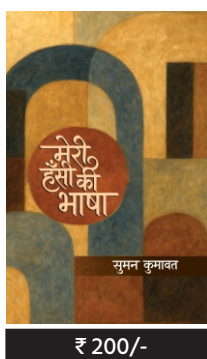


अशोक व्यास जब पहली बार पिता बनने वाले थे, तब वे अजन्मे शिशु से अपनी कविता के जरिए संवाद करते थे; वही संवाद कविताओं के रूप में परिणत हुआ है। शिशु के जन्म की प्रतीक्षा में कवि ने सुन्दर, भावपूर्ण, नैसर्गिक संवेदना से सम्पृक्त कविताएँ रचीं, जो अब उसके आने से पहले संग्रह के रूप में हमारे सामने हैं। इसमें हिन्दी कविताओं के साथ अंग्रेजी अनुवाद भी प्रस्तुत है।

पुस्तक : उसके आने से पहले (द्विभाषी कविता संग्रह)

रचनाकार : अशोक व्यास

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 98

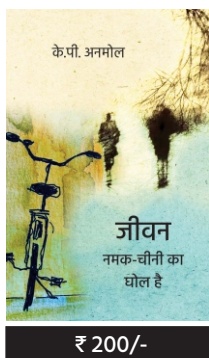


इन कविताओं में मीठे जल के उन कुओं के रीतने की व्यथा है जो किसी रूपक की तरह एक मोड़ पर पहुँचने के बाद स्वाद और भूख; दोनों से जीवन के खाली होने को व्यंजित करती है। स्त्रियों की अदृष्ट पीड़ा और उनका घुटा हुआ हाहाकार की अंतर्धारा तो है ही। साथ ही इन कविताओं में अनकहे का ताप है और है निर्गम की छटपटाहट। विषम वास्तविकताएँ भले ही इन कविताओं में जब तब उभर आने वाले विद्रोह को उपालंभ के मुहाने तक ला कर फ्रीज़ कर दें, इनकी मार्मिकता और व्यंजकता अलक्षित नहीं रह पाती। – आशुतोष दुबे

पुस्तक : मेरी हँसी की भाषा (कविता-संग्रह)

रचनाकार : सुमन कुमावत

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 142

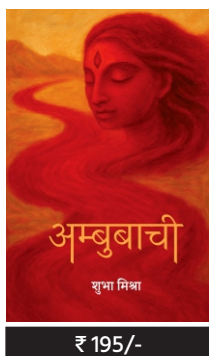


के.पी. अनमोल काव्य में करीब एक दशक से सक्रिय हैं और अपने सार्थक लेखन से हमारे समय के सुख-दुख के साक्षी हैं। मुक्त कविताओं के इस संग्रह में वह अपने कई रूपों में जिस स्वतंत्रता से व्यक्त हुए हैं, उनके अतीत के ग़ज़ल संग्रहों में संभव नहीं हुआ है। विषय वैविध्य, शिल्प के अनूठेपन और सटीक कथ्य में बुनी संग्रह की कविताएँ अपनी आंतरिक राग के साथ पाठक को कविता के साथ रहने-चलने को प्रेरित करती हैं। – अखिलेश श्रीवास्तव

पुस्तक : जीवन नमक-चीनी का घोल है (कविता-संग्रह)

रचनाकार : के.पी. अनमोल

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 112



इन कविताओं के आँचल में उनींदे स्वप्न और ढेर सारी कल्पनाओं को भेंट करने के अलक्षित कोने हैं, लेकिन कविता के किसी भी हिस्से को अलग करके उद्धृत करना मुश्किल है, पूरा संकलन एक कहानी है। वस्तुतः ये कविताएँ एक पुख्ता इकाई की तरह हैं। इसलिए इन्हें हिस्सों में नहीं पढ़ा जा सकता। कई बार तो किसी पंक्ति या पंक्तियों को अलग करके रखने में यह भी डर होता है कि संदर्भ से कट जाने पर उसका अर्थ ही न बदल जाए!

पुस्तक : अम्बुबाची (कविता-संग्रह)

रचनाकार : शुभा मिश्रा

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 128

2025 के प्रकाशन

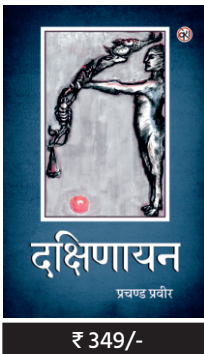


‘उत्तरायण’ और ‘दक्षिणायन’ भारतीय परम्परा में धँसे एक अनुसंधित्सु का रमणीय आख्यान हैं। बारह राशियों पर आधारित ये कहानियाँ राशियों के अनुरूप कथा-चरित्रों की नियति और भवितव्य की निर्मिति करती हैं। एक ओर जहाँ ये कहानियाँ कथा-तत्त्व और औत्सुक्य में आद्योपान्त पाठकों को बाँध कर रखती हैं, वही दूसरी ओर राशियों की गति और गुण-धर्म को समझने वालों को ये द्विगुणित आनन्द की प्रतीति कराती हैं।

पुस्तक : उत्तरायण (कहानी-संग्रह)

रचनाकार : प्रचण्ड प्रवीर

संस्करण : दूसरा (पेपरबैक) पृष्ठ : 298

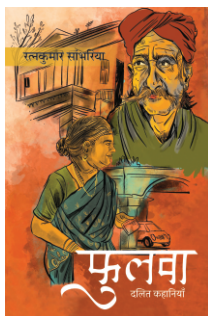


‘उत्तरायण’ और ‘दक्षिणायन’ भारतीय परम्परा में धँसे एक अनुसंधित्सु का रमणीय आख्यान हैं। बारह राशियों पर आधारित ये कहानियाँ राशियों के अनुरूप कथा-चरित्रों की नियति और भवितव्य की निर्मिति करती हैं। एक ओर जहाँ ये कहानियाँ कथा-तत्त्व और औत्सुक्य में आद्योपान्त पाठकों को बाँध कर रखती हैं, वही दूसरी ओर राशियों की गति और गुण-धर्म को समझने वालों को ये द्विगुणित आनन्द की प्रतीति कराती हैं।

पुस्तक : दक्षिणायन (कहानी-संग्रह)

रचनाकार : प्रचण्ड प्रवीर

संस्करण : दूसरा (पेपरबैक) पृष्ठ : 244



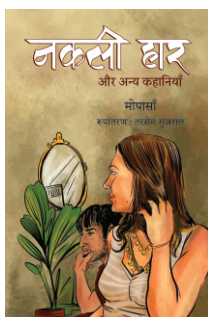
₹ 249 /-

इस संग्रह में शामिल कहानियाँ अतीत पर केन्द्रित न हो कर वर्तमान पर बात करती कहानियाँ हैं, जिनमें गाँव व शहर में भारतीय समाज की जातिवादी संरचना में जन्मते तनाव को अभिव्यक्त किया गया है। इन कहानियों में दलित-उत्पीड़न के अतिरिक्त उन के जीवन से जुड़े दूसरे पहलुओं की झलकियाँ भी हैं, जो पहले से चली आ रही दलित कहानी की रूढ़ियों को तोड़ता है।

पुस्तक : फुलवा (दलित कहानियाँ)

रचनाकार : रत्नकुमार सांभरिया

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 206



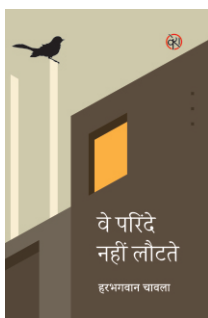
₹ 195/-

यह पुस्तक फ्रांस के प्रसिद्ध कहानीकार मोपासाँ की कहानियों का हिन्दी रूपांतरण है। दुनिया के महान कथाकारों में मोपासाँ का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। अद्भुत कलापूर्ण कुशलता के साथ वे अनपेक्षित ढंग से कहानी समाप्त कर पाठक को हैरान कर देते हैं। उनकी कहानियों में अपने समय के सामंतीय समाज, उनके रीति-रिवाज, नौकरशाही, पारिवारिक ढाँचा और स्त्री-पुरुषों के बदलते सम्बंधों का मार्मिक चित्रण मिलता है।

पुस्तक : नकली हार और अन्य कहानियाँ (कहानी संग्रह)

रचनाकार : मोपासाँ, रूपांतरण : तरसेम गुजराल

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 128



₹ 195/-

इस संग्रह की लघुकथाएँ सामाजिक बंधनों, रीति-रिवाजों पर चोट करती हैं। हरभगवान चावला अपनी लघुकथाओं में समाज के हाशिए के वर्गों पर बात करते हुए, कहानी बुनते हैं। इन लघुकथाओं में स्त्री जीवन की विषमताएँ भी हैं, तो भिन्न लैंगिक पहचान के संघर्ष भी। ये लघुकथाएँ नहीं हैं, बल्कि जीवन के द्वंद्व युद्ध में परिस्थितियों को चित करती, उसके हाथ मात खाती हुई मनुष्यता की अधजली दर्जबंदी हैं।

पुस्तक : वे परिदे नहीं लौटते (लघुकथा-संग्रह)

रचनाकार : हरभगवान चावला

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 128



₹ 175/-

इन कहानियों में हमारे देश की राजनीति और वर्ग विभाजित समाज की असफलताओं पर बेलाग टिप्पणियाँ और करारा व्यंग्य सहजता से दृष्टिगोचर होता है। ये कहानियाँ एक कुशल उपन्यासकार और कवि की क़रीने से तराशी गई कहानियाँ हैं, जिनकी भाषा का अद्भुत लोच और प्रवाह आपको चकित और आनंदित कर देगा।

पुस्तक : ध्रुव तारा कभी अस्त नहीं होता (कहानी-संग्रह)

रचनाकार : राजेश्वर वशिष्ठ

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 112



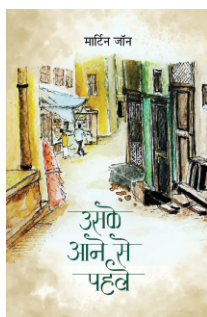
₹ 195/-

ये कहानियाँ जीवन में अनवरत साथ चलती संसार भर की अकथ पीड़ाओं का लेखा-जोखा हैं। इन में करुणा के बिंब भी हैं और मन-आत्मा के विभेदीकरण के बग़ैर अभिव्यक्ति का हू-ब-हू रचाव भी। इन कहानियों में महसूस कर पाने की पीड़ा से आत्म-मुक्ति तलाशती एक कवि, गद्यकार, कहानीकार है और सब से बढ़ कर-इसी संसार की एक स्त्री है। वह स्त्री, जो रचती है, महसूस करती है और महसूस किया हुआ दर्ज करती जाती है।

पुस्तक : अधूरी जिरह (कहानी-संग्रह)

रचनाकार : मंजुला बिट्ट

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 128



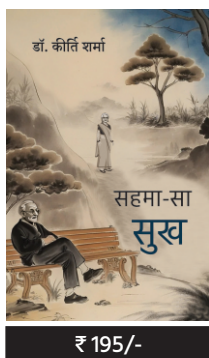
₹ 195/-

इस पुस्तक में मार्टिन जॉन की सात कहानियाँ संगृहीत हैं। प्रभावशाली कहन और भाषा शैली की इन कहानियों में जीवन में घटने वाली सूक्ष्मतम घटनाएं बेहतरीन ढंग से प्रस्तुत हुई हैं। शीर्षक कहानी 'उसके आने से पहले' में मनुष्य जाति के भयावह काल 'कोरोना' के कष्ट, बेबसी एवं छटपटाहट को एक माँ-बाप और उनसे दूर फंस चुके बेटे के माध्यम से बहुत ही मार्मिक ढंग से सामने रखा है।

पुस्तक : उसके आने से पहले (कहानी-संग्रह)

रचनाकार : मार्टिन जॉन

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 128



‘सहमा-सा सुख’ में कुल पाँच प्रेम-कहानियाँ हैं। सभी अलग रंग, अलग मिज़ाज और अलग संवेदना लिए, जीवन सत्य की कहानियाँ हैं। जीवन के चौथे भाग की ओर बढ़ते महिला-पुरुष की सहज, संतुलित, आत्मीय भावनाओं के माध्यम से इन कहानियों में बहुत कुछ अनकहा कह देने तथा बहुत कुछ कहे हुए को अनकहा रहने देने की कोशिश की गई है।

पुस्तक : सहमा-सा सुख (कहानी-संग्रह)

रचनाकार : डॉ. कीर्ति शर्मा

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 128



‘याद गली का सफ़र’ मुझे यहाँ तक लेकर आया है। इस सफ़रनामे में बीता हुआ समय और समाज भी है, जिनकी परछाई इन स्त्री किरदारों पर दिखलाई पड़ती है। स्त्रियाँ समाज के भीतर समय के कैदी बनकर अपने ख़्वाबों को जी रही हैं। उन्हें यक़ीन है कि सिर्फ़ इसी तरह जीते हुए वह अपने ख़्वाबों के सच को पा जाएँगी। मगर यही ख़्वाब फिर जालों में तब्दील हो जाते हैं और स्त्रियाँ किरदार के रूप में शेष रहती हैं। – कंचन जायसवाल

पुस्तक : याद-गली का सफ़र (कहानी-संग्रह)

रचनाकार : कंचन जायसवाल

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 108

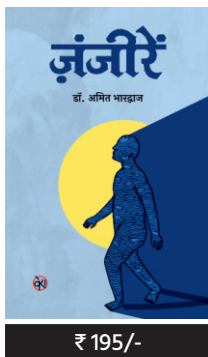


विवेक कुमार मिश्र का यह पहला कहानी संग्रह है। वे मूलतः कवि हैं। समसामयिक विषयों पर आलेख भी लिखते हैं। इस संग्रह में विविध विषयों पर दस कहानियाँ संगृहीत हैं। पुस्तक की शीर्षक कहानी ‘गिलुभाई’ ऑनलाइन दुनिया की कहानी है। ये कहानियाँ कभी गुदगुदाती हैं, तो कभी स्मृतियों के गहरे तल में ले जाती हैं और कभी सोचने पर विवश करती हैं।

पुस्तक : गिलुभाई एवं अन्य कहानियाँ (कहानी-संग्रह)

रचनाकार : विवेक कुमार मिश्र

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 156



‘जंजीरें’ मानवीय संवेदनाओं, सामाजिक बंधनों और आत्मिक संघर्षों का सशक्त दस्तावेज़ है। यह संग्रह जीवन के उन अदृश्य बंधनों को उजागर करता है, जो रिश्तों, परंपराओं, स्वप्नों और स्वयं की आकांक्षाओं के रूप में हमें जकड़े रहते हैं। ये कहानियाँ केवल कथानक नहीं, बल्कि भावनाओं, स्मृतियों और यथार्थ का जीवंत संगम हैं, जो पाठक को आत्म-चिंतन और सहानुभूति की ओर ले जाती हैं।

पुस्तक : जंजीरें (कहानी-संग्रह)

रचनाकार : डॉ. अमित भारद्वाज

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 132



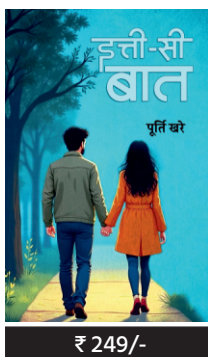
ये कहानियाँ मध्यवर्गीय मानस और उनके जीवन में व्याप्त द्वैत को उद्धाटित करती चलती हैं, जिनका प्रकटीकरण सामान्यतः स्त्रियों के संदर्भ में ही होता है। मध्यवर्ग का प्रायश्चित भी सच्चा न होकर आनुष्ठानिक होता है। अंग्रेजी को लेकर मध्यवर्गीय पूर्वाग्रह का गरिमा शानदार मखौल उड़ाती हैं। सास के आत्म को संबल की राह वे घर में उनकी सहभागिता के जरिए सुझाती हैं।

— राजाराम भादू, आलोचक

पुस्तक : चुपे तीतामरा री (कहानी-संग्रह)

रचनाकार : गरिमा जोशी पंत

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 124



‘इत्ती-सी बात’ जीवन की उन छोटी-छोटी बातों का आईना है, जो साधारण होते हुए भी असाधारण बन जाती हैं। सोलह कहानियों का यह संग्रह रिश्तों की नाजुक डोर, प्रेम की मखमली छुअन, और मानवीय संवेदनाओं के रंगों से सजा है। ये कहानियाँ न केवल मनोरंजन करती हैं, बल्कि जीवन की सूक्ष्मताओं को देखने की नई नज़र देती हैं। इत्ती-सी बात एक किताब नहीं, बल्कि एक एहसास है।

पुस्तक : इत्ती-सी बात (कहानी-संग्रह)

रचनाकार : प्रीति खरे

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 120



₹ 275/-

उपन्यास 'जिंदगी फिर से' जो मानवीय भावनाओं, संबंधों और जीवन की अनिश्चितताओं को गहनता से उकेरता है। यह कृति न केवल प्रेम, हानि और पुनर्जनन की भावनात्मक यात्रा को प्रस्तुत करती है, बल्कि जीवन के दार्शनिक आयामों को भी स्पर्श करती है। कथानक आधुनिक भारतीय परिवेश में रचा गया है, जहाँ पात्र अपने भीतर की उथल-पुथल, सामाजिक अपेक्षाओं और व्यक्तिगत आकांक्षाओं के बीच संतुलन तलाशते हैं।

पुस्तक : जिंदगी फिर से (उपन्यास)

रचनाकार : सौरभ कुमार दास

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 236



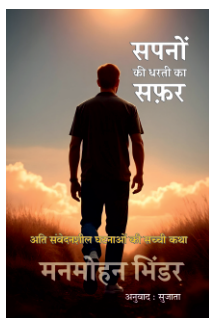
₹ 200/-

यह उपन्यास समकालीन साहित्य में कथ्य और शिल्प के संतुलन का एक प्रभावशाली उदाहरण है। अस्पताल के परिवेश में रची गई एक संवेदनशील कहानी है, जो सोनम की बीमारी और उसके इलाज के इर्द-गिर्द बुनी गई है। उपन्यास न केवल मानवीय संवेदनाओं, रिश्तों और चिकित्सा व्यवस्था की जटिलताओं को उजागर करता है, बल्कि सामाजिक विसंगतियों और आधुनिक जीवन के अंतर्विरोधों को भी सूक्ष्मता से चित्रित करता है।

पुस्तक : गेट वेल सून सोनम (उपन्यास)

रचनाकार : विपिन धनकड़

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 162



₹ 150/-

यह मनमोहन भिंडर के जीवन की रोंगटे खड़े करने वाली सच्ची कहानी है। बल्कि यँ कहें कि उनके जीवन की सच्चाई है। वह कैसे जोखिम भरा सफ़र तय करने के बाद ग्वाटेमाला और मैक्सिको के जंगलों से बच कर अपने सपनों के देश अमेरिका पहुँचे। पाठक एक बार शुरू करने पर पुस्तक ख़त्म करके ही दम लेता है, बीच में छोड़ नहीं पाता। लेखक के कहने का तरीका बेहद दिलचस्प है, जो अंत तक पाठक को बाँध कर रखता है।

पुस्तक : सपनों की धरती का सफर (यात्रा-कथा)

रचनाकार : मनमोहन भिंडर, अनुवाद : सुजाता

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 78

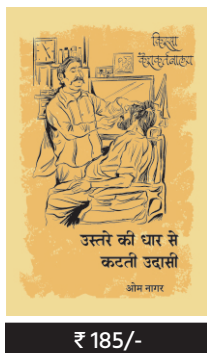


ये व्यंग्य समाचार-पत्रों से आयातित व्यंग्य नहीं हैं, न ही मैं राष्ट्रीय चिंता के मुद्दों पर व्यंग्य का शंखनाद करने वाला हूँ। धर्म, राजनीति और देशव्यापी भ्रष्टाचार से उपजे व्यंग्य बड़े लेखकों के विषय हैं। मेरे व्यंग्य तो मेरे आसपास से उठाये हुये हैं। हर वो बात जिससे मैं थोड़ा परेशान हुआ हूँ, उस पर मेरी लेखनी चल पड़ी है। कदाचित इसलिये भी मैंने अपने व्यंग्य संग्रह का शीर्षक 'एक परेशान आत्मा' रखा है। —द्वारिका वैष्णव

पुस्तक : एक परेशान आत्मा (व्यंग्य-संग्रह)

रचनाकार : द्वारिका वैष्णव

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 128



इस किताब में नाईयों और केशकर्तनालय के क्रिस्से हैं, रोचक बातें हैं, यादें हैं, जिन्हें ओम नागर ने बहुत तन्मयता से लिखा है। इसमें ठेठ भारतीय कस्बों का चित्रण हैं। महानगरों, शहरों और गाँवों में इस विट और यथार्थ को पकड़ना मुश्किल है। लेखक के भीतर एक जीता-जागता कस्बा साँस लेता है, धड़कता रहता है। ऐसी किताब बिना अपने परिवेश, अपने लोगों से बेपनाह मोहब्बत के बिना नहीं लिखी जा सकती। — कृष्ण कल्पित

पुस्तक : उस्तरे की धार से कटती उदासी (डायरी)

रचनाकार : ओम नागर

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 120



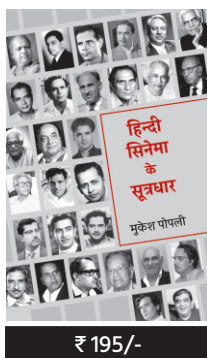
संतोषी के इन वृत्तांतों से यह बात बहुत साफ तौर पर प्रमाणित होती है। वे अपनी आत्मविश्वास भरी छवि के साथ आत्मसंघर्ष करती हैं। जीवन के सम्पूर्ण स्वीकार के साथ अपने कर्म में रत रहती हैं। अपने अनुभवों से अपनी संवेदना को समृद्ध करते हुए समाज के निचले पायदान पर जीते लोगों और बच्चों से गहरा बंधुत्व स्थापित करती हैं।

— राजाराम भादू, आलोचक

पुस्तक : रोही की रोज़ड़ी (कथेतर)

रचनाकार : संतोषी

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 200

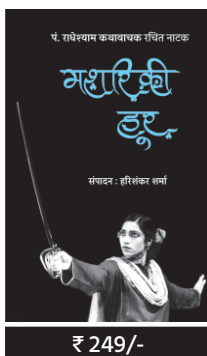


विश्व में सबसे अधिक सिनेमा बनाने वाले देशों में भारत का नाम सबसे ऊपर है और हिन्दी सिनेमा सर्वत्र लोकप्रिय है। पुस्तक 'हिन्दी सिनेमा के सूत्रधार' उन तमाम निर्माता-निर्देशकों की फ़िल्मी यात्रा का दस्तावेज़ है, जिन्होंने सिनेमा के लिए अपना तन-मन-धन सब कुछ अर्पण कर दिया। इन हस्तियों ने दर्शकों के लिए कल्पनाओं और गीत-संगीत के साथ समाज का वास्तविक रूप प्रस्तुत करने में कोई कोताही नहीं बरती।

पुस्तक : हिन्दी सिनेमा के सूत्रधार (सिनेमा)

रचनाकार : मुकेश पोपली

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 128



'मशरिक्की डूर' के मूल में काकोरी-कांड का दर्द भी है और अंग्रेज़ी साम्राज्यवाद के विरोध का स्वर भी। नाटक का यह संपादित संस्करण इसके विविध पक्षों पर लिखी विस्तृत भूमिका के साथ प्रस्तुत है।

पुस्तक : मशरिक्की डूर (नाटक)

रचनाकार : पं. राधेश्याम कथावाचक, संपादन : हरिशंकर शर्मा

संस्करण : पहला संपादित संस्करण (पेपरबैक) पृष्ठ : 178

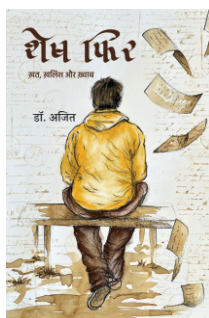


यह पुस्तक मात्र एक विषय की चर्चा नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला का ऐसा व्यावहारिक मार्गदर्शन है, जो तनाव रहित, संतुलित और आनंदपूर्ण जीवन की ओर प्रेरित करती है। लेखक ने तनाव के विविध पहलुओं—मानसिक, शारीरिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक—का गहन विश्लेषण करते हुए इसे एक सहज, सृजनात्मक और समाधानपूर्ण दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है। — स्वामी ध्यान असीम, ओशो संन्यासी और साधक

पुस्तक : तनाव अब बेअसर (तनाव-मुक्त जीवन प्रबंधन के सूत्र)

रचनाकार : मनीष शर्मा

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 124



₹ 175/-

‘शेष फिर’ किसी निर्णय या अनुभव को अंतिम नहीं मानती है, बल्कि कहे और लिखे गए से इतर बहुत कुछ अनकहा रह गया है, इस संभावना को जीवित रखती है। उम्मीद जिंदगी की सबसे खूबसूरत शय होती है, यह इसी उम्मीद को बचाती है कि तमाम आशंकाओं और हीनताओं के बावजूद कल के लिए हम खुद को बचा पाने में सफल हो जाते हैं।

पुस्तक : शेष फिर (चिट्ठियाँ)

रचनाकार : डॉ. अजित

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 112

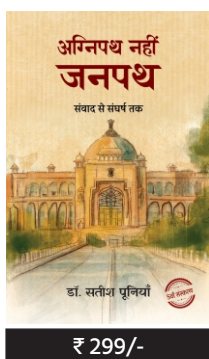


मोबाइल और डेटा क्रांति के इस युग में जो कोमलताएँ हमसे छूटती गयी हैं, उनमें मासूमियत का यह रूप प्रमुखता से शामिल है। इन चिट्ठियों को पढ़ते हुए कभी आप मुस्कराते हैं, कभी हैरत से भरते हैं और कभी अफ़सोस भी होता है कि हम चीज़ों को छिन जाने के बाद ही उनकी असली कदर कर पाते हैं। इनमें एक बेलौस ईमानदारी है और इन्हें सच्चाई की स्याही में कलम डुबो कर लिखा गया है। – विलम चंद्र पांडेय

पुस्तक : स्मृतिलोक से चिट्ठियाँ (चिट्ठियाँ)

रचनाकार : पंकज मिश्र, कैलाश मिश्र

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 120



₹ 299/-

डॉ. सतीश पूनियाँ की यह पुस्तक राजस्थान विधानसभा में उनके विधायक कार्यकाल के जीवंत अनुभवों, हस्तक्षेपों और योगदान का सटीक दस्तावेज़ है। संवाद की शुरुआत से संघर्ष तक की यह यात्रा राजनीतिक जीवन की चुनौतियों, रणनीतियों और सफलताओं का प्रामाणिक चित्रण प्रस्तुत करती है, जो भावी विधायकों, शोधकर्ताओं और राजनीति में रुचि रखने वाले युवाओं के लिए प्रेरणादायी है।

पुस्तक : अग्निपथ नहीं जनपथ (विधानसभा डायरी)

रचनाकार : डॉ. सतीश पूनियाँ

संस्करण : पाँचवाँ (पेपरबैक) पृष्ठ : 194





पंडित राधेश्याम कथावाचक का नाम बीसवीं शताब्दी के भारतीय रंगमंच के इतिहास में एक स्वर्णाक्षर की भाँति अंकित है। पारसी रंगमंच की जीवंत परंपरा में उन्होंने अपनी कथावाचन की अनुपम शैली से एक नवीन अध्याय जोड़ा, जहाँ पौराणिक कथाएँ सामाजिक चेतना और राष्ट्रीय भावना के साथ गूँथी गईं। उनके नाटकों ने स्वतंत्रता संग्राम की भावधारा को भी पुष्ट किया, तथा हिंदी नाट्य को एक नई दिशा प्रदान की।

पुस्तक : पं. राधेश्याम कथावाचक : पारसी रंगमंच (आलेख)

संपादन : हरिशंकर शर्मा

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 272



पंडित राधेश्याम कथावाचक हिन्दी साहित्य और रंगमंच के प्रखर प्रतिनिधि थे। रामायण, कृष्णायन, भ्रमरगीत और एकांकी नाटकों में निहित दृष्टि न केवल धार्मिक आस्था को पोषित करती है, अपितु राष्ट्रीय जागरण, स्त्री-शिक्षा, विधवा-विवाह, जाति-भेद उन्मूलन और स्वतंत्रता संग्राम की ज्वाला को भी प्रज्वलित करती है। यह पुस्तक उनकी रचनाओं के माध्यम से उस युग की सामाजिक-राजनीतिक चेतना का सूक्ष्म विश्लेषण प्रस्तुत करती है।

पुस्तक : पं. राधेश्याम कथावाचक की सामाजिक-राजनीतिक दृष्टि (आलोचना), रचनाकार : हरिशंकर शर्मा

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 362

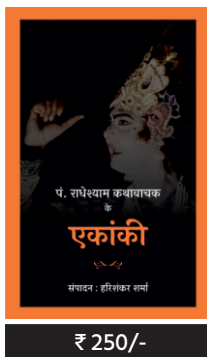


जिस समय दुनिया की वर्चस्वशाली बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अपनी पूँजीवादी संस्कृति का तहलका मचाये हुए हैं, मजदूर कवि शील को याद करना, सौंदर्य की वैकल्पिक सृष्टि को खोजना है। रूढ़िवादी काव्य-कर्म के खिलाफ़ जनसाधारण के सौन्दर्य बोध को याद करना है। अन्य प्रगतिशील कवियों की तरह शील जी ने भी अपना पूरा जीवन इसी जनसाधारण के सौन्दर्य की साधना में लगाया। – केशव तिवारी

पुस्तक : प्रगतिशील आंदोलन और कवि शील (आलोचना)

रचनाकार : जयनारायण मेहता

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 120



इस संग्रह में पं. राधेश्याम कथावाचक के चार एकांकी- 'घण्टा-पंथ', 'कृष्ण-सुदामा', 'शांति के दूत भगवान श्रीकृष्ण', और 'भारत माता' शामिल हैं, जो पाठक को भावनाओं, विचारों और इतिहास के एक अनूठे संगम में ले जाते हैं। ये एकांकी पौराणिकता, सामाजिकता और स्वतंत्रता संग्राम की पृष्ठभूमि में बुने गए हैं, जो हास्य, भक्ति, देश-प्रेम और नैतिकता के विविध रंगों को मंच पर साकार करते हैं।

पुस्तक : पं. राधेश्याम कथावाचक के एकांकी (चार एकांकी)

संपादन : हरिशंकर शर्मा

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 190

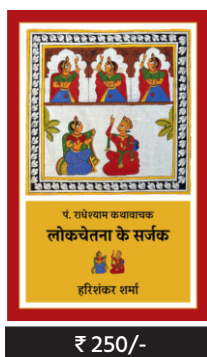


पं. राधेश्याम कथावाचक की रचनाएँ भारतीय साहित्य, रंगमंच और सिनेमा के स्वर्णिम युग का जीवंत दस्तावेज़ हैं। प्रस्तुत पुस्तक में उनके अप्रकाशित नाटकों— धन्ना भगत, उद्धार और आज़ादी के माध्यम से उनकी कालजयी दृष्टि और रंगमंचीय कौशल सामने आता है। हरिशंकर शर्मा के आलोचनात्मक आलेख उनके नाटकों और फ़िल्मों की गहन समीक्षा प्रस्तुत करते हैं, जो उनकी रचनाओं के सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व को और स्पष्ट करते हैं।

पुस्तक : रंग राधेश्याम (नाटक/फ़िल्म के अभिनय सूत्र)

रचनाकार : हरिशंकर शर्मा

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 266

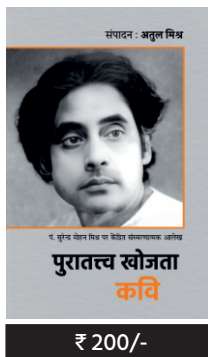


यह पुस्तक पं. राधेश्याम कथावाचक के नाटकों, काव्य और फ़िल्मी पटकथाओं के माध्यम से न सिर्फ़ उनकी रचनात्मकता को प्रस्तुत करती है, बल्कि उनके द्वारा लोक भाषा, भाषा-नीति, धर्म, समय और समाज के प्रति किए गए गहन चिंतन को भी रेखांकित करती है। पंडित राधेश्याम कथावाचक, जिन्हें बरेली के रुहेलखंड क्षेत्र की सांस्कृतिक धरोहर का प्रतीक माना जाता है, ने अपनी रचनाओं में लोक-जीवन की सजीव छटा को उकेरा।

पुस्तक : पं. राधेश्याम कथावाचक : लोकचेतना के सर्जक (आलोचना)

रचनाकार : हरिशंकर शर्मा

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 184



यह पुस्तक पं. सुरेन्द्र मोहन मिश्र की जीवन-यात्रा का एक साहित्यिक दस्तावेज है, जहाँ पुरातत्त्व और काव्य की गहन संवेदनाएँ एकाकार होती हैं। मिश्र जी का जीवन मिट्टी के नीचे दबी सभ्यताओं को उजागर करने और शब्दों में मानवता को संजोने का अनूठा संगम है।

पुस्तक : पुरातत्त्व खोजता कवि

(पं. सुरेन्द्र मोहन मिश्र पर केन्द्रित संस्मरणात्मक आलेख)

संपादन : अतुल मिश्र

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 140



हिन्दी के ललित निबन्धों की वैभवशाली परम्परा में भारतीय सौन्दर्यबोध से ओत-प्रोत 'मन मति रंक' एक प्रशंसनीय कड़ी है जो समकाल में भारतबोध को सहेज लेती है। इस संग्रह में भारतीय सांस्कृतिक विरासत पर दृष्टिपात किया गया है, जिसे संगीतकर्मी, फ़िल्मकर्मी, अभिनेता, गायक और साहित्यकार जैसे कलाविदों के कर्मों के प्रतिफलन में समझा जा सकता है।

पुस्तक : मन मति रंक (ललित निबंध)

रचनाकार : अम्बुज पाण्डेय

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 180

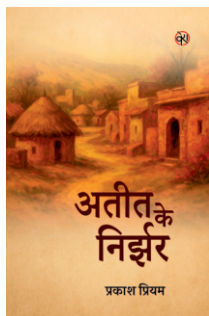


राजस्थान की साहित्यिक परंपरा को केंद्र में रखते हुए, यह पुस्तक महिला लेखिकाओं की लघुकथाओं से लेकर दलित विमर्श, पर्यावरण चिंतन, लोक संस्कृति और आधुनिकता के द्वंद्व तक विविध विषयों पर विचार करती है। लेखिका की पैनी दृष्टि हिंदी साहित्य के युगीन उपन्यासों, कविता की आस्तिक धारा और सामाजिक वींचितों की संवेदनाओं को स्पर्श करती है।

पुस्तक : चिंतन, मंथन, अभिव्यक्ति (निबंध-संग्रह)

रचनाकार : प्रो. अनिता वर्मा

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 178



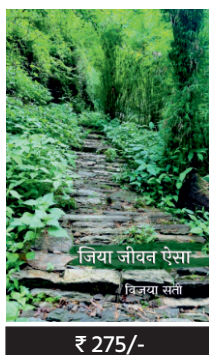
₹ 250/-

यह कोई आत्मकथा नहीं, न ही यात्रा-वृत्तान्त है; यह उन लोगों, उन क्षणों और उन जगहों की रेखाएँ हैं जिन्होंने लेखक के अन्तर्मन को छुआ, कभी हँसाया, कभी रुलाया और कभी बरबस सोचने पर विवश कर दिया। बचपन के गाँव की मिट्टी की सोंधी खुशबू से लेकर विश्वविद्यालय के व्याख्यान-कक्षों की गम्भीरता तक, यह पुस्तक एक संवेदनशील व्यक्ति का जीवन्त दस्तावेज है।

पुस्तक : अतीत के निर्झर (संस्मरण)

संपादन : प्रकाश प्रियम

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 176



₹ 275/-

दिल्ली के लेडी श्री राम कॉलेज से प्रारम्भ होकर लेखिका का यह आत्मकथात्मक सफ़र पारिवारिक बंधनों, अध्यापन की चुनौतियों और जीवन की असंगतियों से होकर गुजरता है, तथा 2011 में बुदापे़शत की विदेशी धरती पर पुनरावलोकन करता है। वहाँ की नवीन संस्कृति, एकाकीपन और प्रकृति ने उनकी कलम को नई स्फूर्ति दी, जिसके परिणामस्वरूप ये संस्मरण प्रेम, वियोग, सामाजिक चेतना और आत्मान्वेषण के विविध आयामों को सहज भाव से चित्रित करते हैं।

पुस्तक : जिया जीवन ऐसा (संस्मरण-डायरी)

रचनाकार : विजया सती

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 184



₹ 175/-

नितेश की ये काव्य- अभिव्यक्तियाँ सान्द्र और सघन हैं। वे स्वयं भी रिल्के की भाँति बीज होना चाहते हैं। प्रार्थना भाव है या भावना- इस द्वंद्व से गुजरते हुए वे अपनी अंतश्चेतना की टोह लेते हैं। किसी भी युवा कवि के लिए यह एक ज़रूरी आत्मसंघर्ष है।

— राजाराम भादू

पुस्तक : चेतना के पंख (रिल्के के पत्रों पर आधारित कविताएँ)

रचनाकार : नितेश व्यास

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 100



₹ 150/-

इस संग्रह की गज़लें जीवन के विविध रंगों— प्रेम, विरह, आध्यात्मिकता और सामाजिक चेतना को शब्दों के माध्यम से जीवंत करती हैं। सुरेन्द्र चतुर्वेदी की लेखनी में परंपरा और आधुनिकता का सुंदर समन्वय है, जो पाठक को भावनात्मक और वैचारिक स्तर पर गहरे तक छूता है। उनकी शायरी में हिंदी-उर्दू की समृद्ध परंपरा की सुगंध है, जो सहजता और गहनता के साथ पाठक के मन में उतरती है।

पुस्तक : प्यास में पानी डूबा आज (गज़ल-संग्रह)

रचनाकार : सुरेन्द्र चतुर्वेदी

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 88



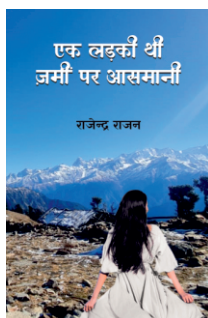
₹ 150/-

यह गज़ल-संग्रह जीवन की नश्वरता और मानवीय संवेदनाओं का एक ऐसा दस्तावेज है, जहाँ शब्द रेत के कणों-सा बिखरते हैं, फिर भी भावनाओं की मजबूत दीवार खड़ी करते हैं। इस संग्रह की गज़लें, नज़्में और कृतआत पाठक को प्रेम, दर्द, विद्रोह और आशा के उस सफर पर ले जाते हैं, जहाँ हर शेर एक कहानी कहता है, हर मिसरा एक सवाल छोड़ता है।

पुस्तक : रेत की दीवार (गज़ल-नज़्म-कृतआत)

रचनाकार : सलीम कुरेशी 'जुन्नारदेवी'

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 96



₹ 200/-

राजेन्द्र राजन जी ने कुछ ही वक्त पहले अपने कलम की रौशनाई वाली मोमबत्ती हाथ में लेकर गज़ल की घुमावदार सुरंग में प्रवेश किया है। लेकिन मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि अब यह मोमबत्ती एक खुशबूदार अगरबत्ती में तब्दील हो रही है। बहर की कोई चूक या ग़फ़लत भी उनके यहाँ दिखाई नहीं पड़ती। उनका मज़हूम और उनका कहन भी गम्भीरता लिये हुए है। — लोकेश कुमार सिंह 'साहिल'

पुस्तक : एक लड़की थी ज़मीं पर आसमानी (गज़ल-संग्रह)

रचनाकार : राजेन्द्र राजन

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 112



₹ 150/-

दरवेशाना रंग के कवि राजकुमार कुम्भज को अज्ञेय द्वारा संपादित चौथे तारसप्तक के कवि के तौर पर जाना जाता है, हालाँकि उन का नाम केवल इसी पहचान का मोहताज नहीं है। उन की कविताएँ अपने आप में उन की पहचान के लिए काफी हैं। कुम्भज की कविताएँ बेबाकी से बनी कविताएँ हैं, जो इतनी बेबाक हैं कि पाठक अपने अंतर्मन में झाँक कर देखने को आतुर हो जाता है कि उस की आत्मा का गंग कैसा है?

पुस्तक : कहाँ नहीं है काई (कविता-संग्रह)

रचनाकार : राजकुमार कुम्भज

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 124



₹ 195/-

सिद्धेश्वर मैदान और पहाड़ को जोड़ने वाले कवि हैं। उनकी कविता में नदियों का बहता जल है। वन और वनस्पतियाँ, सूर्योदय और सूर्यास्त है। ऋतुएँ हैं। इस जुड़ाव में जहाँ स्मृतियाँ फूल की तरह खिलती हैं, वहीं वर्तमान की खड़ी चढ़ाई श्लथ कर देती है। इस यात्रा का अंतहीन होना ही इसे त्रासद बनाता है। रौशनी की तलाश में कवि ऐसी यात्राएँ करते रहे हैं।

— अरुण देव

पुस्तक : समय ने समझाया (कविता-संग्रह)

रचनाकार : सिद्धेश्वर सिंह

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 128



₹ 150/-

शहशाह आलम के इस काव्य संग्रह की कविताओं में प्रेम के विभिन्न रूपों का सुंदर शब्दांकन है, चाहे वह प्रेम-पश्चात का अवसाद हो या प्रेम में होते समय की काव्य-चेष्टाएँ। यहाँ प्रेम छत पर लगा सौंफ का पौधा भी है, तो बारिश की बूँदें भी, जो विरह में तन-मन आग भरती हैं। यहाँ प्रेम हावड़ा का पुल भी है और कोई शहतूत का पेड़ भी।

पुस्तक : बारिश बाजा बजाती है (कविता-संग्रह)

रचनाकार : शहशाह आलम

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 128



‘ठीक समानांतर’ में शामिल कविताएँ, जीवन के कंटीले पथ पर नंगे पैर चलते मनुष्य का आख्यान हैं। ये कविताएँ दप्तर की डायरी के पीछे लिखे गए नोट्स भी हैं, रोज़नामचे भी हैं और कल्पना की उड़ान के बिंब भी हैं। ये महज़ कविताएँ नहीं हैं, ये एक जीवन को कागज़ पर खींच लाने की जद्दोज़हद है और कामयाब जद्दोज़हद है।

पुस्तक : ठीक समानांतर (कविता-संग्रह)

रचनाकार : लक्ष्मी घोष

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 168

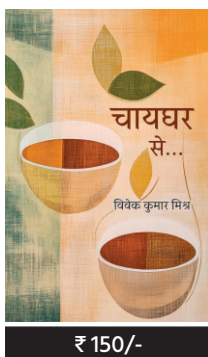


दिव्या श्री एकदम नई कवयित्री हैं, उन्होंने 2018 से लिखना शुरू किया और बहुत प्रारंभ में ही अपनी कहन शैली से पाठकों का ध्यान आकर्षित करने में सफल हो गईं। यह उनका पहला संग्रह है। इसमें पारंपरिक जीवन में स्त्री के संघर्ष, किसान की बेटी होने की मुश्किलें और पितृ-प्रेम से वंचित लड़कियों के दुख के भी मार्मिक चित्रण हैं, लेकिन इस संग्रह के केंद्र में है प्रेम, और विपरीत परिस्थितियों में भी प्रेम को जिंदा रखने की कला। – मदन कश्यप

पुस्तक : आँखों में मानचित्र (कविता-संग्रह)

रचनाकार : दिव्या श्री

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 164



इस संग्रह में चाय पीने के बाद की स्फूर्ति और उमंग की रौ में सभ्यता-संस्कृति का विमर्श भी है, तो चाय के बहाने से सामाजिक यथार्थ की प्रतिपुष्टि भी। इस किताब की कविताएँ पढ़ कर पता लगता है कि ‘चय्याशों’ का अपना एक समानांतर लोकतंत्र भी है और सत्ता भी, जो इसी संसार में है और जो कुछ पलों में ही, महज़ कुछ घूंटों के बाद ही हमारे सामने प्रत्यक्षरूपेण आ खड़ी होती है।

पुस्तक : चायघर से... (कविता-संग्रह)

रचनाकार : विवेक कुमार मिश्र

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 116



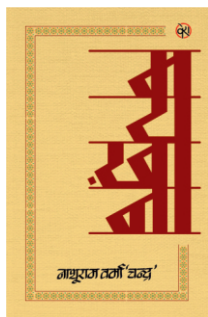
₹ 200/-

इन कविताओं में ग्राम्य जीवन की सरलता, रिश्तों की ऊष्मा, और समय के बदलते परिदृश्य के बीच मनुष्य की आंतरिक खोज अपनी मौलिक अभिव्यक्ति पाती है। कमल किशोर पिपलवा की भाषा में देशज शब्दों की लय और शास्त्रीय संदर्भों का आधुनिक बोध एक अनूठा समन्वय रचता है। राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित यह संग्रह हिंदी कविता की समृद्ध परंपरा में एक सशक्त हस्तक्षेप है।

पुस्तक : निज मन मुकुरु सुधारि (कविता-संग्रह)

रचनाकार : कमल किशोर पिपलवा

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 130



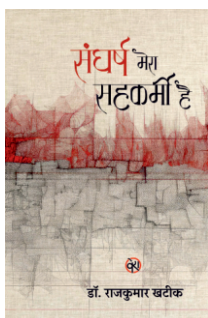
₹ 150/-

यह पुस्तक तीन खंडों में संरचित है, प्रत्येक खंड नशे के विभिन्न आयामों को गहनता से प्रस्तुत करता है। प्रथम खंड नशे की आकर्षक सतह को उकेरता है, जहाँ रंग-बिरंगी बोटलें, मयखाने की चमक और सामाजिक रिवाजों के बहाने इसकी ओर खींचते हैं। द्वितीय खंड नशे के विनाशकारी प्रभावों को चित्रित करता है। तृतीय खंड नशे की लत से मुक्ति की आकांक्षा और समाज को जागृत करने की पुकार को व्यक्त करता है।

पुस्तक : मयखाना (खण्ड काव्य)

रचनाकार : नाथूराम वर्मा 'चन्द्र'

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 84



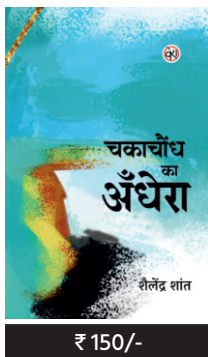
₹ 200/-

'संघर्ष मेरा सहकर्मि है' की कविताएँ अनुभवों का सच्चा आलेख हैं, जहाँ प्रेम, दर्द, आधुनिकता का प्रभाव, और संस्कृति का क्षरण जीवंत हो उठता है। डॉ. राजकुमार खटीक की लेखनी सरलता में गहराई और साहस में सत्य को समेटे हुए है, जो पाठक को आत्मचिंतन की ओर ले जाती है। राजस्थान साहित्य अकादमी के सहयोग से प्रकाशित यह कृति प्रत्येक पाठक को अपने भीतर के संघर्ष को समझने और उसका सामना करने की प्रेरणा देती है।

पुस्तक : संघर्ष मेरा सहकर्मि है (कविता-संग्रह)

रचनाकार : डॉ. राजकुमार खटीक

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 144



शैलेंद्र शांत का यह काव्य-संग्रह जीवन की चमक के पीछे छिपे अंधेरे को उजागर करता है। उन्मासी छोटी, दोटूक कविताएँ-संवेदना, व्यंग्य और सच्चाई का मारक मिश्रण। सहज भाषा में गहरे अर्थ लिए, यह कृति पत्रकारिता और कविता के बीच का सेतु है। चकाचौंध में छिपी पीड़ा का आईना, जो सोचने को मजबूर करता है।

पुस्तक : चकाचौंध का अँधेरा (कविता-संग्रह)

रचनाकार : शैलेंद्र शांत

संस्करण : दूसरा (पेपरबैक) पृष्ठ : 100



कभी रजनीगंधा की सौंधी महक, तो कभी धूप की तपिश, कभी अधूरी चाहतों की कसक, तो कभी सपनों की उड़ान – ये कविताएँ हर उस हृदय को छूती हैं, जो अपने भीतर की मौन हलचल को शब्द देना चाहता है। शशि 'तृष्णा' की लेखनी सादगी और गहनता का अनूठा संगम है, जो पाठक को आत्म-चिंतन और भावनात्मक गहराई की ओर ले जाती है।

पुस्तक : तन पलाश, मन पारिजात (कविता)

रचनाकार : शशि 'तृष्णा'

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 132



'जादूगरनी' मानवीय संवेदनाओं का ऐसा आलम है, जहाँ प्रेम की चहचहाहट, दुख की सिसकियाँ, और जीवन की अनघट धुनें एक साथ गूँजती हैं। प्रत्येक कविता एक दर्पण है—जो न केवल सत्य उजागर करती है, बल्कि आत्मा को भीतर तक झकझोरती है। इसमें प्रेम की मासूमियत से लेकर सामाजिक विद्रूपताओं की चोट तक, और प्रकृति के अटल नियमों से लेकर खंडहरों में बसी उम्मीद तक, हर भाव एक नई कहानी कहता है।

पुस्तक : जादूगरनी (कविता-संग्रह)

रचनाकार : सुदर्शन व्यास

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 122



प्रेम की कविताएं प्रेम के विभिन्न पहलुओं— पहली मुलाकात की खुशी, प्यार की गहराई, समर्पण की अनुभूति और बिछड़ने की पीड़ा— को उजागर करती हैं। अजीत पाल सिंह दैया ने प्रेम के हर एक कोमल भाव को हल्के से छुआ है। वे बड़ी ही कोमलता से प्रेम को एक अनंत यात्रा के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जो हमें जीवन की गहराई और सुंदरता को समझने के लिए प्रेरित करती है। यह संग्रह प्रेम की शक्ति को दर्शाता है।

पुस्तक : प्रेमम् (कविता-संग्रह)

रचनाकार : अजीत पाल सिंह दैया

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 164



एक सहज, सरल ऊर्ध्वमुखी यात्रा के संकेत इन कविताओं की प्राण ऊर्जा है। ये कविताएँ आधुनिक जगत को आत्म दृष्टि संपन्न होने के लिए प्रेरित करती हैं। इन कविताओं में सांसारिक निस्संगता है किंतु प्रकृति के साथ गहरी अंतरंगता है। ये कविताएँ परम सौंदर्य और परम माधुर्य को तान देती प्रतीत होती हैं। तर्क और विचारणा के पार इन कविताओं में एक आत्मीय लय है जो आंतरिक सुमधुरता को प्रकट करती है।— डॉ. चैतन्य प्रकाश योगी

पुस्तक : अनुत्तर के अमूर्त रंग (कविता-संग्रह)

रचनाकार : अमित कल्ला

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 114



अपने समय के संकटों, विडम्बनाओं और विसंगतियों से ये कविताएँ परिचित हैं। इन्हें यह पता है कि इन चीजों के बदलने के लिए वे स्वयं सीधे-सीधे कुछ नहीं कर सकतीं। इसके बावजूद वे एक तरह से सजग और सक्रिय हैं। उन्हें अपने दायित्वों और जवाबदेही का एहसास है। अपनी ज़मीन और इस ज़मीन के लोगों से उनका गहरा जुड़ाव है साथ ही बदले हुए या सायास बदले जा रहे समय की ज़रूरी समझ भी! — प्रकाश कान्त

पुस्तक : मेरे साथ अक्सर ऐसा होता है (कविता-संग्रह)

रचनाकार : भानु प्रकाश रघुवंशी

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 128



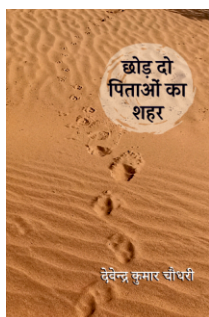
₹ 175/-

‘सपनों से परे’ जीवन की उन अनछुई परतों को उकेरता है, जहाँ भावनाएँ, अनुभव और समाज की सच्चाइयाँ एक-दूसरे से गहरे संवाद में बंधती हैं। यह संग्रह केवल कविताओं का संकलन नहीं, बल्कि मानव मन की गहरी खोज और सामाजिक संवेदनाओं का जीवंत दस्तावेज है। कवि ने अपनी रचनाओं में प्रेम, पीड़ा, आशा, और सामाजिक विडंबनाओं को इस तरह पिरोया है कि प्रत्येक कविता पाठक के अंतर्मन को झकझोरती है।

पुस्तक : सपनों से परे (कविता-संग्रह)

रचनाकार : बृजेंद्र अग्निहोत्री

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 120



₹ 195/-

देवेन्द्र की खूबी है— वे अपनी कविताओं में बिलकुल टटके बिंबों, प्रतीकों और रूपकों का प्रयोग करते हैं। इसलिए देवेन्द्र के प्रथम कविता संग्रह 'छोड़ दो पिताओं का शहर' की कविताएँ हमें आश्चर्य करती हुई भविष्य के प्रति उम्मीद जगाती हैं।

— पंकज चौधरी, चर्चित कवि

पुस्तक : छोड़ दो पिताओं का शहर (कविता-संग्रह)

रचनाकार : देवेन्द्र कुमार चौधरी

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 128



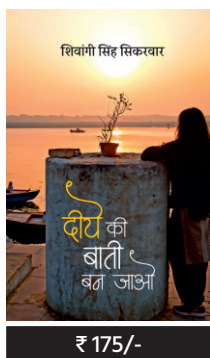
₹ 249/-

डॉ. मोनिका काकोड़िया की कविताएँ सरल भाषा में गहन दार्शनिकता और संवेदनशीलता का समन्वय रचती हैं, जो पाठक को आत्ममंथन और सामाजिक चेतना की ओर ले जाती हैं। यह संग्रह न केवल काव्य-प्रेमियों, बल्कि हर उस पाठक के लिए प्रेरणादायी है, जो जीवन के सूक्ष्म और व्यापक आयामों को समझना चाहता है।

पुस्तक : मन में अंतरिक्ष रहता है (कविता-संग्रह)

रचनाकार : डॉ. मोनिका काकोड़िया

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 200



‘दीये की बाती बन जाओ’ नारी के अंतर्मन की सशक्त आवाज़ है, जो समाज के तमस को सत्य के दीप से आलोकित करती है। इन कविताओं में नारी का आत्मबोध, प्रकृति से एकाकार होने की ललक, और सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ आक्रोश जीवंत हो उठता है। शिवांगी की कलम कभी माँ, बहन, बेटों के प्रेम और समर्पण को रंग देती है, तो कभी घरेलू हिंसा और पराधीनता के बंधनों को तोड़ने का आह्वान करती है।

पुस्तक : दीये की बाती बन जाओ (कविता-संग्रह)

रचनाकार : शिवांगी सिंह सिकरवार

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 100

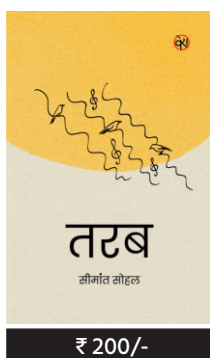


‘रेत पर रेखाएँ’ एक ऐसा संग्रह है जो विरोध का सौंदर्य, प्रेम की शक्ति, संवेदनशीलता का बल, और जन-संघर्ष की गरिमा को समेटे हुए है। इसकी कविताएँ मात्र भाव नहीं हैं, ये प्रश्न हैं, विचार हैं, और क्रांतिक घोषणाएँ हैं। यह संग्रह वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य के विरुद्ध एक जागरूक कवि की जवाबदेही को दर्ज करता है—जहाँ कविता ‘मन बहलाव’ नहीं, बल्कि ‘मन बदलने’ का माध्यम बनती है। — दीपक वोहरा

पुस्तक : रेत पर रेखाएँ (कविता-संग्रह)

रचनाकार : राजेश ‘भारती’

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 144



‘तरब’ की कविताएँ प्रेम की अनंत गहराइयों, दुख की मर्मस्पर्शी व्यथा, प्रकृति की हरीतिमा और वर्षा की मधुर लय को स्पर्श करती हैं। ये कविताएँ एक क्षणिक चित्र की भाँति हैं। जीवन की क्षणभंगुरता और भावुक उल्लास के बीच के संतुलन को उजागर करती हैं, मानो प्रत्येक पंक्ति में तरब की लय छिपी हो, जो आत्मा को संगीत की तरह झंकृत करती है। इन कविताओं की खासियत है कि इनमें शब्द कम हैं, पर भाव अपार हैं।

पुस्तक : तरब (कविता-संग्रह)

रचनाकार : सीमांत सोहल

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 126



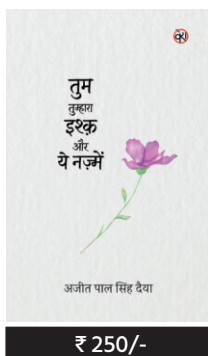
₹ 200/-

इस संग्रह में माँ है, जो कुम्हार भी है, बढई भी है और सरस्वती भी। मृत शिशु का वह मौन है, जो ईश्वर को भी पत्थर बना देता है। मणिकर्णिका की चिताएँ हैं, जहाँ मृत्यु उत्सव बन जाती है। सुनेत्रा है, जो कभी मन्दाकिनी है, कभी चिड़िया है, कभी बारिश में भीगती मल्लिका है, कभी किताबों की वह मादक गंध जिसे बिब्लियोस्मिया कहते हैं। ये कविताएँ चीखती नहीं, रिसती हैं। धीरे-धीरे, जैसे पुरानी दीवार से नमक। जब रिसाव पूरा होता है, पाठक के भीतर एक खाली, गीला, बहुत अपना-सा कराची बाकी रह जाता है।

पुस्तक : कराची जंक्शन (कविता-संग्रह)

रचनाकार : राजेश्वर वशिष्ठ

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 134



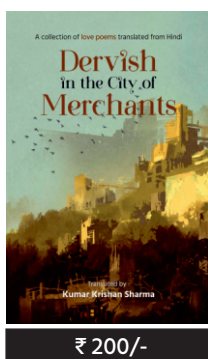
₹ 250/-

इस संग्रह की कविताओं का विषय प्रेम है। मानव सभ्यता और संस्कृति का आधार असल में प्रेम नामक अनुभूति ही है। किसी भी सभ्यता या समाज की उन्नति के लिए यह ज़रूरी है कि 'प्रेम' को एक उदात्त विचार और एक आधारभूत तत्व के रूप में समुचित सम्मान मिले। इस संग्रह की कविताओं में प्रस्तुत प्रेम, मूलतः स्त्री और पुरुष के मध्य लौकिक और अलौकिक प्रेम है।

पुस्तक : तुम, तुम्हारा इश्क और ये नज़्में (कविता-संग्रह)

रचनाकार : अजीत पाल सिंह दैया

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 174



₹ 200/-

Dervish in the City of Merchants, translated by Kumar Krishan Sharma, is a poignant collection of love poems originally crafted in Hindi by contemporary poets: Kamal Jeet Choudhary, Aditya Sharma, Shailja Pathak, Rajat Krishan, Rohit Thakur, Piyush Kumar, Manoj Sharma, Farid Khan, and Kumar Krishan Sharma himself. This anthology transcends romanticism, blending themes of resistance, hope, and human connection.

Book : DERVISH IN THE CITY OF MERCHANTS (Poetry)

Translator : Kumar Krishan Sharma

Edition : First (Paperback) Page : 92

2024 के प्रकाशन



₹ 195/-

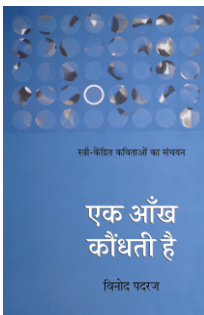
कमल जीत चौधरी एक अद्वितीय कवि हैं। इनकी कविताएँ मार्मिक और नवीन हैं। इनमें समाज, राजनीति और समकालीन पतन की समीक्षा है; और मानव मूल्यों का पक्षपोषण है। दैनंदिन जीवन के सुख-दुःख, पारिवारिक जीवन और राजनैतिक दुष्क्र-सब का नया रसायन यहाँ मिलता है। भाषा और शैली में भी ताज़गी है।

— अरुण कमल

पुस्तक : दुनिया का अंतिम घोषणापत्र (कविता-संग्रह)

रचनाकार : कमल जीत चौधरी

संस्करण : दूसरा (पेपरबैक) पृष्ठ : 116



₹ 200/-

इस पुस्तक में एक स्त्री के जन्म से लेकर मृत्यु तक उस के द्वारा जिए गए लगभग सभी किरदार पर कविताएँ हैं। यह कविता संचयन उन स्त्रियों पर भी बात करता है, जिन पर बोलना कथित सभ्य वर्ग को असभ्यता लगती है। इस में माँ के लिए भी कविताएँ हैं, तो स्त्री के कथित तौर पर बदनाम क्रार दे दिए गए रूप पर भी। इस संग्रह में शामिल कविताएँ पाठक के तौर पर आप को माँ के आँचल में भी ले जा सकती हैं और दूर कहीं अबूझ प्रश्नों के जंगल में भी।

पुस्तक : एक आँख कौंधती है (स्त्री-केंद्रित कविता-संग्रह)

रचनाकार : विनोद पदरज

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 150

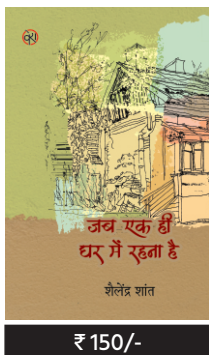


राजेश्वर वशिष्ठ, पाँच खंडों में विभाजित इस संग्रह में शामिल कविताओं के माध्यम से एक नवीन काव्य संसार का निर्माण करते हैं, जिस संसार में सामाजिक व राजनैतिक सरोकार भी हैं, तो स्त्री मन की थाह लेने का प्रयत्न करते बिंब भी। इस किताब में शामिल कविताओं में कवि आत्मीय संवादों के माध्यम से एक ऐसी बात कहने की कोशिश करता है, जिसे मानव होने की संवेदनशीलता पुरातन समय से समाज से कहना चाहती है।

पुस्तक : प्रजातंत्र में कबूतर (कविता-संग्रह)

रचनाकार : राजेश्वर वशिष्ठ

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 138

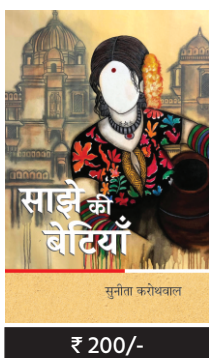


इस संग्रह में शामिल शैलेंद्र शांत की कविताएँ बहुत लंबी न होते हुए भी अपने आप में अनुभव का विस्तृत दस्तावेज हैं। कवि की सामाजिक चेतना और उस के भीतर के मध्य-वर्गीय मनुष्य के बीच के अंतर्द्वंद्व को गहराई से जानने के लिए इस संग्रह की कविताओं पर निगाह करना ज़रूरी सा है। इसी मानवीय ऊहापोह में किस प्रकार कविता बनती है, इस संग्रह में देखा जा सकता है।

पुस्तक : जब एक ही घर में रहना है (कविता-संग्रह)

रचनाकार : शैलेंद्र शांत

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 100

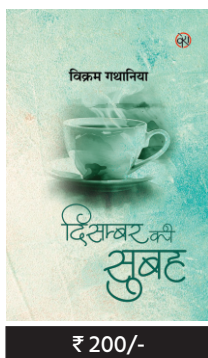


इस संग्रह में शामिल कविताएँ ग्रामीण संस्कृति, स्त्री-दशा, लोक पर आधारित कविताएँ हैं, जिन में सुनीता समाज के दोगलेपन और सौंदर्य दोनों को ही उन की अस्ल शक्ल में दर्ज करती हैं। मानव का मनोवैज्ञानिक पक्ष किस प्रकार हमारे जीवन को दिशा देता है, इस संग्रह की कविताएँ उस का भरपूर चित्र प्रस्तुत करती हैं।

पुस्तक : साझे की बेटियाँ (कविता-संग्रह)

रचनाकार : सुनीता करोथवाल

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 118



एक कवि को मौसमों से बहुत लगाव होता है और कवि अक्सर कहते हैं कि मौसम स्वयं एक कविता है। इसी कथन को चरितार्थ करता है विक्रम गथानिया का कविता संग्रह- दिसम्बर की सुबह। इस संग्रह की कविताएँ प्रकृति के सुकोमल चित्रण, ऋतुओं के मनभावन विवरण की बानगी हैं। प्रेम, वर्षा, संवेदना, प्रकृति और मानवीय संबंधों पर रची गई कुछ नवीन चेष्टाओं वाली कविताएँ।

पुस्तक : दिसम्बर की सुबह (कविता-संग्रह)

रचनाकार : विक्रम गथानिया

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 140



ये कविताएँ अपने भीतर पीड़ा-जल की चुभन समेटे हुए हैं। एकाकीपन और परिवेशगत अनुभवों पर आधारित गान हैं। ये कविताएँ सामाजिक यथार्थ पर आधारित हैं, जिन में समाज के नंग की पोल खुलती है। अनु चक्रवर्ती मूलतः करुणा व भाव की कवि हैं और उन की कविताएँ पाठकों के लिए नई संभावनाएँ रचती हैं। सौंदर्य व गाम्भीर्य के मेल-जोल से बुनी ये कविताएँ समकालीन पाठकों की काव्य-क्षुधा को तृप्त करने के लिए पर्याप्त हैं।

पुस्तक : उदासियों की उर्मियाँ (कविता-संग्रह)

रचनाकार : अनु चक्रवर्ती

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 256



ये कविताएँ भावों से लेकर भाषा तक सरल, स्पष्ट और चित्तग्राही हैं। अधिकांश कविताएँ छोटी और क्षणिकाओं की श्रेणी में आती हैं जिन्हें पाठक के लिए समझना और अनुभव करना कोई जटिल कार्य नहीं है। कुलदीप की कविताओं में भरपूर वैविध्य है, वे सभी रंग हैं जो जीवन को पूर्ण करते हैं। वे सभी चिंताएँ हैं जो समाज के हर एक जागरूक व्यक्ति को होनी चाहिए।

— राजेश्वर वशिष्ठ

पुस्तक : धूप और धरती का प्रेम (कविता-संग्रह)

रचनाकार : कुलदीप सिंह भाटी

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 128



₹ 150/-

एक चित्रकार जब अपनी कूची को कलम में बदलता है, तो कैसे सुंदर शब्द-चित्र रचता है, यह दिव्या सिंह को कविताओं को पढ़ कर जाना जा सकता है। 'रंग शब्द नैन' में शामिल कविताएँ, दिव्या सिंह के जीवन के कैनवस के ब्रश-स्ट्रोक्स हैं। जीवन से उपजी कविताएँ हैं, जिन में प्रेम, करुणा और भाव के विभिन्न रूपों के दर्शन सहसा ही होते हैं।

पुस्तक : रंग शब्द नैन (कविता-संग्रह)

रचनाकार : दिव्या सिंह

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 114



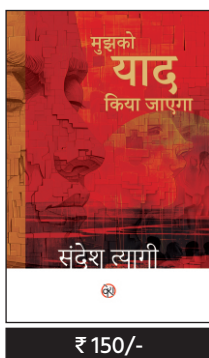
₹ 150/-

इस संग्रह के माध्यम से पता चलता है कि एक स्त्री अपने जीवन की आपा-धापी में पीछे छूट गई एक अलहड़ लड़की की स्मृतियों में कितनी मार्मिक है और कितनी भावुक भी। स्त्री मन की टोह लेते इस काव्य संग्रह में स्त्रीत्व का रुदन भी है, तो जीवन के शोकगीत की छटा भी। सामाजिक यथार्थ और सामाजिक परिस्थितियाँ स्त्री को किस प्रकार प्रभावित करते हैं और उन का स्त्री के मन पर कैसा घाव पड़ता है, इन कविताओं से जाना जा सकता है।

पुस्तक : न कदापि खंडितः (कविता-संग्रह)

रचनाकार : संगीता जाँगिड़

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 112



₹ 150/-

संदेश त्यागी अपने गीत-गजलों के लिए जाने जाते हैं। उनकी इस पुस्तक में 54 नए गीत संगृहीत हैं। इन गीतों में याद, पीड़ा, प्रेम के साथ-साथ प्रकृति एवं देशभक्ति की मौजूदगी है। जीवन के विविध रंगों एवं विषयों पर लिखे गए ये गीत पढ़ने के साथ-साथ ही संगीत से बजते हैं।

पुस्तक : मुझको याद किया जाएगा (गीत-संग्रह)

रचनाकार : संदेश त्यागी

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 96

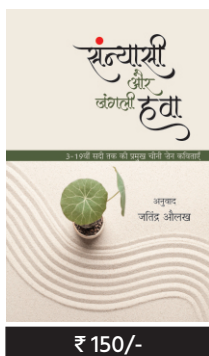


इस संग्रह की कविताएँ, शब्दों में खुलने वाला चुपियों का वह गुप्त राग हैं, जो पाठक की मन-वीणा को झंकृत कर देता है। ये कविताएँ समकालीन कविता व समाज, संस्कृति और मानवीय संवेदनशीलता के विभिन्न मूल्यों का पता देती हैं। शब्द व संकेतों के सहारे विवेक कुमार मिश्र, पाठकों को एक ऐसी अनथक यात्रा पर ले जाते हैं, जिस में पाठक को पता चलता है कि अभी भी इस संसार में बहुत कुछ है, जिसे वह परख नहीं पाया है।

पुस्तक : चुपियों के पथ पर (कविता-संग्रह)

रचनाकार : विवेक कुमार मिश्र

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 120



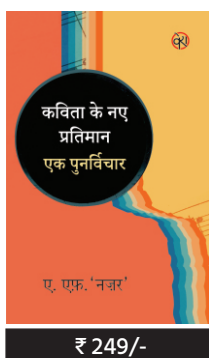
3-19वीं सदी तक की प्रमुख चीनी जैन कविताएँ

इन कविताओं का परिवेश प्रकृति है। मानो प्रकृति ही सभी जटिल सांसारिक समस्याओं का सहज निदान है। यह बात कहने से, उतनी प्रभावी नहीं लगती। यह ही क्यों, कोई भी बात कितनी प्रभावी होगी यह इस बात पर निर्भर करता है कि वह किसने कही है। सूचना अथवा जानकारी के बतौर कही गई बात, सिर्फ उतना ही मूल्य रखती है, जितना बाज़ारू मूल्य देकर वह खरीदी गई है। वह, प्रमाणिक और प्रभावी भी उतनी ही होगी। – अम्बिकादत्त

पुस्तक : संन्यासी और जंगली हवा (अनुवाद : कविता)

अनुवादक : जतिंद्र औलख

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 88

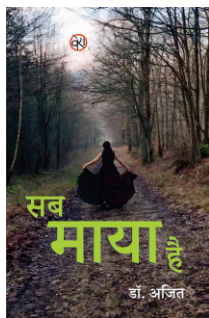


‘कविता के नए प्रतिमान : एक पुनर्विचार’ काव्य-सृजन की नवीनतम परिस्थितियों और नवीनतम काव्य-चिंतन के आलोक में ‘जीवंत कविता’ के प्रतिमानों की पहचान करने का प्रयास है।

पुस्तक : कविता के नए प्रतिमान : एक पुनर्विचार (आलोचना)

रचनाकार : ए.एफ. ‘नज़र’

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 232



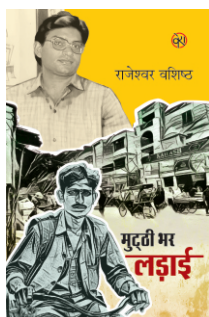
₹ 195/-

पात्रों की भरमार नहीं होना 'सब माया है' का एक उल्लेखनीय पक्ष है। यहाँ दृश्यों की भीड़ भी नहीं। यह दो पात्रों की यात्राओं की कहानी है। ये यात्राएँ बाहरी भी हैं और भीतरी भी। बाहरी यात्राओं में पहाड़ हैं, मैदान हैं, समंदर हैं, जिनके बहाने बहुत-सा गूढ़-अगूढ़ किया गया है। भीतरी यात्राओं का माध्यम हैं प्रश्नोत्तर। अधिकतर प्रश्न नायक की ओर से आते हैं। प्रश्न साधारण हैं, उत्तर अप्रत्याशित। – सुदर्शन शर्मा

पुस्तक : सब माया है (बेतरतीब क्रिस्से)

रचनाकार : डॉ. अजित

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 162



₹ 200/-

इस उपन्यास में लेखक के निज जीवन के बिंब अपने मार्मिक रूप में पाठकों के अंतर्मन को कुरेदते हैं और ऐसी एक छाप छोड़ जाते हैं, जो टीस तो देती है, लेकिन आनंद भी देती है। एक पत्रकार किस तरह दुनिया देखता है और उस की संवेदनशीलता किस प्रकार उस के जीवन को प्रभावित करती है, यह उपन्यास पढ़ कर जाना जा सकता है।

पुस्तक : मुट्ठी भर लड़ाई (उपन्यास)

रचनाकार : राजेश्वर वशिष्ठ

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 136



₹ 249/-

पश्चिमी सभ्यता की चकाचौंध के दुष्परिणामों का कथावाचकजी ने बहुत पहले अनुमान लगा लिया था। आज इसी सभ्यता की चकाचौंध की आगोश में आकण्ठ डूबी युवा पीढ़ी एकाकी होती जा रही है। विलासिता, भोग-विलास, एकाकी जीवन, भाग-दौड़ की महानगरीय जीवन-पद्धति, तनाव और संघर्ष के कारण आज का 'श्रवण कुमार' अपनी मंजिल से भटक गया है। अतः कथावाचकजी का यह नाटक आज भी प्रासंगिक है।

पुस्तक : श्रवण कुमार (नाटक)

रचनाकार : पं. राधेश्याम कथावाचक, संपादन : हरिशंकर शर्मा

संस्करण : पहला संपादित संस्करण (पेपरबैक) पृष्ठ : 200



₹ 249/-

‘वीर अभिमन्यु’ पारसी रंगमंच का पहला हिन्दी नाटक है। इस नाटक की अपार सफलता ने पं. राधेश्याम कथावाचक की नाट्य दुनिया के द्वार खोल दिये थे। इस पुस्तक में मूल नाटक के साथ ही इसके तकनीकी पक्ष हरिशंकर शर्मा ने अपने संपादकीय में विस्तृत रूप से लिखा है।

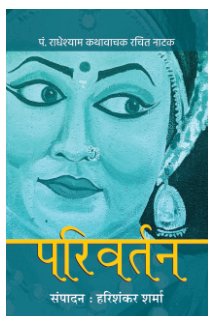
यह नाटक देश के क्लब, स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय तथा संस्थाओं द्वारा एक हजार से भी अधिक बार खेला जा चुका है।



पुस्तक : वीर अभिमन्यु (नाटक)

रचनाकार : पं. राधेश्याम कथावाचक, संपादन : हरिशंकर शर्मा

संस्करण : पहला संपादित संस्करण (पेपरबैक) पृष्ठ : 232



₹ 249/-

वेश्या समस्या पर लिखा गया पं. राधेश्याम कथावाचक का यह पहला नाटक है, जिसकी मूल समस्या आज भी समाज में ज़िंदा है। महानगरों के बदनाम कोटे, कालगल्स, सम-विषम लैंगिक संबंध, पोर्न फ़िल्में तथा समाज में सैक्स की भूख और उससे जुड़े अपराध समाज में असुरक्षा का महौल बना रहे हैं। अतः आज भी इस नाटक का सामाजिक महत्व है। यह नाटक पं. राधेश्याम कथावाचक की दूरदृष्टि का परिणाम है।

पुस्तक : परिवर्तन (नाटक)

रचनाकार : पं. राधेश्याम कथावाचक, संपादन : हरिशंकर शर्मा

संस्करण : पहला संपादित संस्करण (पेपरबैक) पृष्ठ : 220



₹ 120/-

पद्मा चौगांवकर बच्चों के लिए लम्बे समय से लिख रही हैं। उनकी कहानियाँ, कविताएँ बाल-पाठकों द्वारा खूब पसंद की जाती हैं। वेरा प्रकाशन से प्रकाशित अभी तक यह एकमात्र बाल-साहित्य की पुस्तक है। जिसमें बच्चों के लिए 12 रोचक कहानियाँ संगृहीत हैं।

पुस्तक : कहानियाँ कुछ कहती हैं (बालकहानियाँ)

रचनाकार : पद्मा चौगांवकर

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 48

राजस्थानी किताबें



₹ 150/-

डॉ. अर्जुनदेव चारण समर्थ कवि, नाटककार अरु आलोचक हैं। वां रा कविता संग्रह 'यूँ ई छूट जाया करै की...' मांय 55 आकार में छोटी, पण चिंतन में बड़ी कवितावां सामल हैं। हरेक कविता में आ खासियत है कै एकर पढ़ियां पछै कविता री गूँज लांबै बगत ताई पाठक रै मन में बणी रैवै। ओ संग्रह कविता रै मारग बधण री हूस राखण वाळी नवी पीढी नै दीठ देवण रो पण काम करैला। - डॉ. सत्यनारायण सोनी

पुस्तक : यूँ ई छूट जाया करै की... (कविता)

रचनाकार : अर्जुनदेव चारण

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 82



₹ 150/-

'भीत भरोसै री' युवा कवि सत्येंद्र चारण री पैली काव्य कृति है। कवि आपरै परिवेश, प्रकृति अरु संस्कृति रै नाना रूपां माथै रीझतां थकां मन में ऊमड्यां भावां नैं काव्य रूप में आबद्ध करै, इण दीठ सू वारी कवितावां आत्ममुग्ध अभिव्यक्तियां कही जा सकै है। कवि आपरी अनुभूति, मान्यता अरु कल्पना रो पूरो साथ लेवतां थकां आपरै विचार नैं थापित करण सारू अणथक खेचळ करतो निगै आवै। - डॉ. गजादान चारण 'शक्तिसुत'

पुस्तक : भीत भरोसै री (कविता)

रचनाकार : सत्येंद्र चारण

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 118



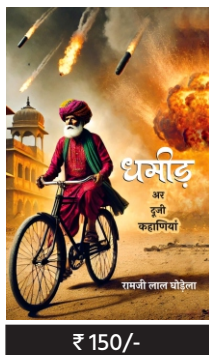


स्त्रिस्टी रै बणियां पछै रै ग्रह-गोचर री स्थितियां हजारूं बरसां सूं समाज री आस्था रै रूप अपारै सांम्ही है पण वां नै काव्यात्मक दीठ सूं अरथावण री आफळ पैली बार औ कवि करै। औ जथारथ अर कल्पना रौ मेळ आधुनिक राजस्थानी कविता नै नुंवी रंगत देवै। कवि रै काव्य संसार री सगळी कवितावां जिण अेक भाव नै केन्द्र में लावण री आफळ करती निगै आवै वा है मिनख री 'स्मृति'। औ कवितावां मिनख री स्मृति नै बचावण अर जगावण रौ जतन करै। —डॉ. अर्जुन देव चारण

पुस्तक : ग्रह गोचर (कविता)

रचनाकार : मदन गोपाल लढा

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 96



धमीड़ अर दूजी कहाणियां में रामजीलाल घोड़ेला चौबीस कहाणियां भेळी करी है। औ कहाणियां समाज री नित घटती घटनावां अर नुंवी बातां माथै आधारित कहाणियां है जकी पाठकां रै चित्त नै झकझोरण रौ काम करै। कम सबदां में गै'री बात कैवण री कला लेखक री खासियत कैयी जा सकै। कहाणियां पाठकां नै अैकण कानी समाजू कुरीतियां सूं सावचेत करण री खैचळ करै बटै ई चरित्तर निरमाण री राह दिखावती ई निगै आवै।

पुस्तक : धमीड़ अर दूजी कहाणियां

रचनाकार : रामजी लाल घोड़ेला

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 82

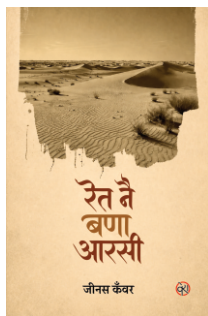


कवि, गीतकार अर साहित्य अकादेमी नई दिल्ली रै बाल साहित्य पुरस्कार सूं पुरस्कृत बाल साहित्यकार प्रहलाद सिंह 'झोरड़ा' बाल साहित्य रै बधापै सारू नवीं विधा 'टाबरां री आडियां' नांव सूं मायड़ भासा मांय आडियां री पोथी रची है, जिकी टाबरां नैं घणी दाय आवैला अर इण छेत्र मांय आछो मुकाम पावैला। -पवन पहाड़िया

पुस्तक : टाबरां री आडियां

रचनाकार : प्रहलाद सिंह झोरड़ा

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 56



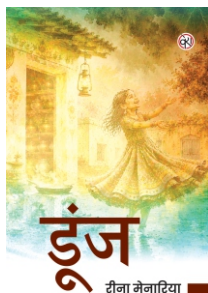
₹ 200/-

इण सग्रे मांय परकिरती प्रेम, पर्यावरण, अंतस री वेदना, मिनखा जूण री अबखायां, नारी मन रा चितराम, गांव रो जीवण, गांव रा लोग, प्रेम-प्रीत, मायड़ भासा, माईत, जलमभोम सूं हेत आद रो घणो सोवणो बरणाव जीनस कैवर करियो है। इण कवितावां रे सागै रेत सूं हेत दरसावती घणी सोवणी रचनावां इण सग्रे मांय है। इणा मांय कवयित्री रो रेत सूं घणो हेत लखावै। स्यात इणी कारण इण पौथी रो नांव 'रेत ने बणा आरसी' राख्यो है।

पुस्तक : रेत नै बणा आरसी (कविता)

रचनाकार : जीनस कैवर

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 128



₹ 175/-

‘डूज’में राजस्थान री माटी री महक, गांव री सादगी, रिस्तां री मिठास, कड़वाहट, अर औरतां रे जीवन री सच्ची कहाणियां संकलित हैं। रीना मेनारिया री लेखनी में लोक रीति-रिवाज अर सामाजिक यथार्थ री गहराई साफ दीखै है। मां-बेटे रो रिस्तो, सास-बहू री दुनिया, गांव में बरसात री आस अर बदलती जूण री कहाणियां इण संग्रह री आत्मा हैं।

पुस्तक : डूज (कहानी)

रचनाकार : रीना मेनारिया

संस्करण : पहला (पेपरबैक) पृष्ठ : 90

हमारी पुस्तकें यहाँ उपलब्ध हैं :



9680433181 **amazon**

Flipkart



amazonkindle

आप हमसे यहाँ जुड़ सकते हैं :

@veraprakashan    

पुस्तकें मंगवाने के लिए हमें ईमेल अथवा वॉट्सएप करें—

Email : veraprakashan@gmail.com, WhatsApp : 9680433181

नए प्रकाशन



@verapraakashan



Email : verapraakashan@gmail.com, WhatsApp : 9680433181